लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आभा

सत्यमेव जयते

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

हिंदी पखवाड़ा

आभा

सोचा न था चलते-चलते ये दुनिया, इक दिन रुक जाएगी,
तरसते थे जिसके लिए रात-दिन, वो फुरसत यूं ही मिल जाएगी,
वो शौक जिन्हें पूरा करने को, वक्त न देता था इजाजत,
उनके लिए मोहलत, यूं ही मिल जाएगी,
उसकी दुनिया में हैं सब एक, ये अहसास बहुत अच्छा है,
माना उदास हैं ये दिन, मगर उम्मीद पुख्ता है,
कि फिर से खुशियां बिखर जाएंगी।

अप्रैल 2019 - मार्च 2020

सत्यमेव जयते

प्रकाशक
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

क्रिकेट टूर्नामेंट

आभा

कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

अंक: 83-86
वर्ष 2019-20
मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण			पृ.सं.
1	संदेश- मनोहर लाल, मुख्य मंत्री, हरियाणा, चण्डीगढ़			5
2	संदेश- समर कांत ठाकुर, महानिदेशक लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएं), चण्डीगढ़			6
3	संदेश- विशाल बंसल, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा, चण्डीगढ़			7
4	संदेश- सुशील कुमार ठाकुर, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़			8
5	संदेश- फ़ैसल इमाम, महालेखाकार (लेखा व हकदारी), पंजाब एवं यू.टी., चण्डीगढ़			9
6	संदेश- फ़ैसल इमाम, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, चण्डीगढ़			10
7	संदेश- के.एस. नरसिंहा प्रसाद, उप-महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, चण्डीगढ़			11
8	पाठकों की कलम से			12
9	आभा परिवार, संपादकीय			15
10	आभा परिवार फोटो			16
11	कार्यालय के प्रांगण से			17
12	लोकतान्त्रिक व्यवस्था की एक खामोश क्रान्ति - प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण प्रणाली	लेख	मुनीष भाटिया	19
13	माता-पिता का सम्मान	संकलन	अविनाश पासी	20
14	भाई-भतीजावाद	लेख	पूर्णिमा सूद	21
15	किसानों के मसीहा - सर छोटू राम	लेख	मनु अनेजा	22
16	चंद्रमा एवं उपवास	लेख	तिलक राज जसवाल	23
17	1857 की क्रांति के उद्घोषक - मंगल पांडे	लेख	ललित कुमार	24
18	कोरोना वरदान है या अभिशाप	लेख	प्रिया शर्मा	25
19	भारत में गरीबों की स्थिति	लेख	शुभम वर्मा	27
20	कोरोना वायरस, सावधानी ही बचाव है	लेख	राकेश रंजन मिश्रा	29
21	मादक पदार्थों का बढ़ता सेवनः एक गंभीर चिंता का विषय	लेख	डॉ. लाखा राम	31
22	डायबिटीज की समस्या और उपचार	लेख	धर्मवीर सिंह	33
23	शर्त	कहानी	प्रवीन कुमार अरोड़ा	34
24	विद्या कर्म - श्रेष्ठकर्म	लेख	रमेश कुमार	36

क्र.सं.	विवरण			पृ.सं.
25	सबसे कीमती चीज	लेख	रीना	37
26	भावभीनी विदाई	लेख	सोनू कुमार	38
27	जिम्मेवार कौन?	लेख	सोनू कुमार	39
28	प्रवासी मजदूर: मजदूर या मजबूर	लेख	मनीष देव	40
29	यह समय भी बीत जायेगा	कविता	कुमारी हर्षिता शर्मा	41
30	दायरों की सियासत	कविता	मुनीष भाटिया	42
31	ये कुचक्र सियासतदानों का	कविता	राम कुमार	42
32	नई पीढ़ी बनाम पुरानी पीढ़ी	कविता	गौतम कुमार	43
33	लॉकडाउन	कविता	कुसुम	43
34	बोलो मां	कविता	मनमीत कौर	44
35	कोरोना और इंसान	कविता	अनुराग भारती	44
36	मजदूर	कविता	बीरेन्द्र कुमार	45
37	कहां गए देश के संस्कार	कविता	अमित लाठर	45
38	जिंदगी	कविता	रीना	46
39	मेरा गांव	कविता	प्रेम सिंह रावत	46
40	मेरी प्रिय बेटी	कविता	भावना सूद	47
41	मेरा भारत महान	कविता	रमेश कुमार	48
42	कोरोना से पाएं निजात	कविता	हरभजन सिंह	48
43	मेरी जिंदगी	कविता	प्रेम ग्रोवर	49
44	पहले तोलो फिर मुंह खोलो	कविता	प्रेम ग्रोवर	49
45	कोरोना	कविता	ललित कुमार	49
46	कोरोना और प्रकृति	कविता	मनु अनेजा	50
47	कोरोना और मजदूर	कविता	अंकित खोखर	50
48	हिंदी दिवस	कविता	निशा ढींगरा	51
49	दिनांक 13.09.2019 से 26.09.2019 के दौरान हिंदी पखवाड़े में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारी			52
50	गणतंत्र दिवस 2020 पर 'नकद पुरस्कार' एवं 'प्रशस्ति पत्र' प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारी			52
51	गणतंत्र दिवस 2020 पर 'प्रशस्ति-पत्र' प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारी			54
52	हिंदी साहित्य का सफर	कविता	ललित कुमार	55
53	सेवानिवृत्ति			56
54	श्रद्धांजलि			56

नोट: रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों/संकलनकर्त्ताओं के अपने हैं। संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। अस्वीकृत रचनाएं लौटाने का प्रावधान नहीं है। रचनाओं में आवश्यक संशोधन किए जा सकते हैं।

आवरण पृष्ठ: परिकल्पना - सुश्री शिखा सूद

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

मनोहर लाल
मुख्य मंत्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़

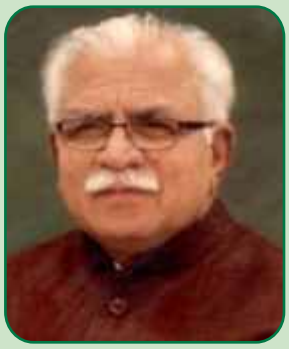

संदेश

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा द्वारा अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि उत्पन्न करने और उनकी रचनात्मक प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विभागीय हिंदी पत्रिका 'आभा' का नियमित रूप से प्रकाशन किया जाना अत्यंत सराहनीय है।

हिंदी भाषा हमारे देश की समृद्ध संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब है। अत: हिंदी के प्रति प्रेम एवं सम्मान प्रकट करना हम सभी का राष्ट्रीय कर्तव्य है और इस कर्तव्य के निर्वहन के लिए ही हर वर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है ताकि बड़े पैमाने पर हिंदी भाषा का विकास एवं प्रचार-प्रसार किया जा सके।

आशा है कि पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय की विभागीय एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी देने के साथ-साथ कर्मचारियों को लेखों, संस्करणों एवं कविताओं के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति का उचित अवसर भी प्रदान करेगा। साथ ही, कार्यालय हिंदी भाषा को अपनी कार्यप्रणाली का अभिन्न अंग बनाए रखेगा।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

(मनोहर लाल)

समर कांत ठाकुर
महानिदेशक, लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएं)
चण्डीगढ़

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की पत्रिका 'आभा' (वर्ष 2019-20) के अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। समाज को समय-समय पर जागरूक करने में हिंदी पत्रिकाओं की अहम भूमिका रही है। आधुनिक युग में हिंदी पत्रिकाओं की गरिमा शीर्ष पर है। हिंदी पत्रिकाओं के माध्यम से कार्यालय स्तर पर विचारों की अभिव्यक्ति और आपसी सामंजस्य को बल मिलता है।

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' राजभाषा हिंदी की प्रगति का वह साक्ष्य है जो कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के संगठित प्रयासों का प्रतिबिंब बनकर हिंदी के प्रति कार्यालय की निष्ठा को परिलक्षित कर रही है। अपने शब्द रूपी रंगों से पत्रिका को आलोकित करने के लिए सभी रचनाकार एवं पत्रिका प्रकाशन हेतु कार्यरत सहयोगी अधिकारियों और कर्मचारियों का अथक परिश्रम सराहनीय है। आशा है कि पत्रिका का यह अंक भी पत्रिका के गत अंकों की भांति ज्ञानवर्धक एवं रुचिपूर्ण होगा।

पत्रिका की प्रगति एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(समर कांत ठाकुर)

विशाल बंसल
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
हरियाणा, चण्डीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा की विभागीय हिंदी पत्रिका "आभा" के आगामी अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाएं बहुमूल्य योगदान निभा रही हैं।

किसी भी कार्यालय की हिंदी पत्रिका उस कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की भावनाओं को लिखित रूप देने में अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आज हिंदी न केवल आम आदमी की भाषा है बल्कि विज्ञान, उद्योग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी आगे बढ़ रही है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी के महत्व को पहचाना गया है। विश्व के अन्य देशों के विश्वविद्यालयों में भी हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है। आज हर क्षेत्र में एक भाषा के रूप में हिंदी की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका 'आभा' के पूर्व अंकों की भांति यह अंक भी अत्यंत आकर्षक व ज्ञानवर्धक होगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

विशाल बंसल

(विशाल बंसल)

सुशील कुमार ठाकुर
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय), चण्डीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' का एक और अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं की महती भूमिका रही है। इनमें संकलित रचनाओं में कर्मचारियों की रचनात्मकता निखर कर व्यक्त होती है। 'आभा' में सदैव से उत्कृष्ट साहित्य का दिग्दर्शन होता आया है। इसके पीछे आपके मार्गदर्शक मंडल, संपादक मंडल और रचनाकारों की प्रतिभा और अथक परिश्रम का सुफल दिखता है। इसी प्रकार आगे भी आभा अपने नाम को चरितार्थ करती रहे। आगामी प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

सुशील

(सुशील कुमार ठाकुर)

फ़ैसल इमाम
महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
पंजाब एवं यू.टी., चण्डीगढ़

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि आपके कार्यालय द्वारा विभागीय पत्रिका "आभा" का प्रकाशन शीघ्र किया जा रहा है। इसके लिए मैं पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों एवं रचनाकारों को बधाई देता हूं।

पत्रिका का प्रकाशन एक रचनात्मक प्रयास है। इससे कार्मिकों के अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि के साथ-साथ हिंदी का प्रचार-प्रसार भी सुनिश्चित होता है। राजभाषा हिंदी ने सदैव पूरे देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया है। इस दिशा में हिंदी गृह पत्रिका "आभा" अपनी भूमिका बखूबी निभा रही है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल और सभी रचनाकारों एवं पाठकों को बधाई देते हुए मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल साहित्यिक भविष्य एवं प्रगति की कामना करता हूं।

पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

फ़ैसल

(फ़ैसल इमाम)

फ़ैसल इमाम
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

मुख्य संरक्षक की कलम से

भारत अनेक भाषाओं का देश है। अत: किसी एक भाषा को राज-काज की भाषा बनाना अनिवार्य था। भारत के संविधान द्वारा 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा बनाया गया क्योंकि यही एक ऐसी भाषा थी जिसके माध्यम से समस्त सूचनाएं, आदेश आदि जन-जन तक पहुंचाए जा सकते हैं। संविधान के अनुसार जब तक संपूर्ण भारतवासी हिंदी भाषा का प्रयोग सुगमता से न कर सकें तब तक दूसरी भाषा के रूप में अंग्रेजी का प्रयोग किया जा सकेगा। खेद की बात है कि आज तक हिंदी को समस्त भारतवर्ष में सरकारी काम-काज करने के लिए अपनाया नहीं जा सका। यद्यपि इसके प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक नीतियां समय-समय पर बनाई जाती रही हैं।

राजभाषा का प्रचार-प्रसार बढ़ाने के लिए सरकारी कार्यालयों में हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। इसी प्रयास में हमारे कार्यालय की पत्रिका 'आभा' निरंतर प्रकाशित की जा रही है। इससे न केवल हिंदी पढ़ने के प्रति कार्यालय के सदस्यों का रूझान बढ़ाया जा रहा है बल्कि अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपनी रचनात्मक प्रतिभाओं का प्रदर्शन करने में भी पत्रिका का विशेष योगदान रहता है।

आशा है कि राजभाषा के प्रोत्साहन में योगदान देने के लिए यह पत्रिका भविष्य में भी प्रकाशित होती रहेगी। पत्रिका की सामग्री एवं प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामना

फ़ैसल

(फ़ैसल इमाम)

सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है।

के.एस. नरसिंहा प्रसाद
उप-महालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

संरक्षक की कलम से

यह हम सब के लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में हमें कार्यालय में वर्ष भर में हुई विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की झलक मिलती है। जिन भी अधिकारियों/कर्मचारियों में लेखन प्रतिभा है, उन्हें इस पत्रिका के माध्यम से उसे उजागर करने का अवसर भी प्राप्त होता है। इस तरह उन्हें लेख, कविता, कहानी इत्यादि के द्वारा विभिन्न विषयों पर अपने विचारों को दूसरों के साथ सांझा करने में सफलता मिलती है। इसके अतिरिक्त यह कार्यालय के सदस्यों में पठन प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहित करती है।

पत्रिका में शामिल करने हेतु अपनी रचनाएं प्रदान करने तथा इसे प्रकाशित करवाने के लिए सभी सदस्यों का सहयोग सराहनीय है।

आशा है कि इस पत्रिका की निरंतरता बनी रहेगी तथा भविष्य में इसका स्वरूप और अधिक निखरता जाएगा।

के.एस. नरसिंहा प्रसाद

(के.एस. नरसिंहा प्रसाद)

पाठकों की कलम से.....

आपकी कार्यालयी हिंदी पत्रिका 'आभा' की प्रति प्राप्त कर विशेष हर्ष का अनुभव हुआ। राष्ट्रीय ध्वज के तीन रंगों से सुसज्जित पत्रिका का आवरण पृष्ठ, पत्रिका का मुद्रण, छाया चित्र व सभी लेख, कहानियां एवं कविताएं अत्यंत सुंदर, प्रासंगिक और ज्ञानवर्धक हैं।

पत्रिका में संकलित श्री गुरू सरूप बंसल जी की कहानी 'रिश्तों की अनबूझ पहेली', श्री धर्मवीर सिंह जी का लेख 'स्वास्थ्य ही जीवन है', श्रीमती पूजा सिंह मंडल जी का लेख 'चांद की ओर भारत के बढ़ते कदम-चंद्रयान-2', श्री मनु अनेजा जी की कविता 'हमारे सैनिक' और सुश्री कुसुम पांचाल जी की कविता 'भीगी पलकें' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई साथ ही पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु ढेरों शुभकामनाएं।

पूनम पाण्डेय, आईएएएस प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब, प्लॉट नं. 21, सैक्टर 17-ई, चण्डीगढ़-160017

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' के अंक 79-82 की प्राप्ति हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का मुद्रण एवं छायांकन अति आकर्षक है। पत्रिका की विषय-वस्तु ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, संग्रहणीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मंडल को धन्यवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षे. लेप.) का कार्यालय ओडिशा, भुवनेश्वर

हिंदी पत्रिका 'आभा' की एक प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद।

"आभा" राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। हिंदी भाषा के सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं सरल भाषा में हैं और रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उच्च कोटि की भी हैं। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका की साज-सज्जा और अन्तर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम हैं।

"आभा" के उत्तम संपादन, गुणवत्ता, रचनात्मकता एवं संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), तमिलनाडु, लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालई, तेनामपेट, चेन्नई-18

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' के अंक की दो प्रतियां प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएं सराहनीय हैं। विशेषकर गुरू सरूप बंसल की कहानी 'रिश्तों की अनबूझ पहेली', डॉ लाखा राम का लेख 'आज का अंक केंद्रित परीक्षा तंत्र एवं प्रतिभा का अवमूल्यन' पूजा सिंह मंडल का लेख 'चांद की ओर भारत के बढ़ते कदम-चंद्रयान-2' एवं प्रेम सिंह की कविता 'गंगा अवतरण' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) का कार्यालय, केरल, तिरूवनन्तपुरम-695001

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिंदी पत्रिका 'आभा' के 79-82 अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही पत्रिका की साज-सज्जा भी बहुत सुंदर है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाले हैं। पत्रिका के 'आगे बढ़ता भारत' अंक के अंतर्गत प्रकाशित रचनाएं यथा श्री गुरू सरूप बंसल द्वारा लिखित कहानी 'रिश्तों की अनबूझ पहेली', श्री कुलदीप सिंह जांगड़ा द्वारा लिखित लेख 'कागज', श्री अविनाश पासी द्वारा रचित लघुकथा 'तांबे का सिक्का', श्री तिलक राज जसवाल द्वारा लिखित लेख 'भोजन और स्वास्थ्य', डॉ लाखा राम द्वारा लिखित लेख 'आज का अंक केन्द्रित परीक्षा तंत्र एवं प्रतिभा का अवमूल्यन', श्री अंकित खोखर द्वारा रचित कविता 'बेटियां' अत्यंत नीतिपरक, सुपाठ्य, ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, डी.एफ. ब्लॉक, सॉल्ट लेक, ५वां तल, कोलकाता-700064.

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आभा' 79-82 अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। समाविष्ट सभी रचनाएं सुपाठ्य, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा आर्थिक एवं सेवा मंत्रालय, ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली-110002.

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी वार्षिक पत्रिका 'आभा' 79-82 अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानप्रद, मनोरंजक तथा रुचिकर हैं। पत्रिका की साज-सज्जा उत्कृष्ट है और इसमें संकलित चित्र मनोहर हैं। इस पत्रिका की रचनांए जीवन के विभिन्न स्वरूपों का आकर्षक और विचारपूर्ण दृश्य प्रस्तुत करती हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं के रचनाकारों और सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु इस कार्यालय की ओर से शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) 'महालेखाकार भवन', कौलागढ़, देहरादून-248195

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी वार्षिक पत्रिका 'आभा' के 79-82वें अंक की प्रति की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएं अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखंड का कार्यालय, रांची-834002

आपके कार्यालय की पत्रिका 'आभा' का अंक 79-82 की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद, पत्रिका का संपादन सराहनीय है। पत्रिका में सभी लेख एवं रचनाएं प्रशंसनीय हैं। विशेष तौर पर रिश्तों की अनबूझ पहेली, भीगी पलकें, आज की महिमा आदि रचनाएं बड़ी प्रेरणादायक हैं।

पत्रिका का प्रवाह इसी प्रकार निरंतर चलता रहे, ऐसी कामना है।

कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) म.प्र., 53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462011

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'आभा' की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री गुरू सरूप बंसल की कहानी 'रिश्तों की अनबूझ पहेली', श्री मनु अनेजा का लेख 'मानवता की मूर्ति-मदर टेरेसा' तथा श्री अविनाश पासी का लेख 'मां-बाप' आदि उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-।।, महाराष्ट्र, नागपूर, 'आडिट भवन', पोस्ट बैग नं.-220, सिविल लाईन्स, नागपूर-440001

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आभा' का 79-82 वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं बहुत ही विचारोतेजक, ज्ञानवर्धक तथा साहित्यिक दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। श्रीमती पूर्णिमा सूद की 'प्रेरणा', श्री गुरू सरूप बंसल की 'रिश्तों की अनबूझ पहेली' श्री मनु अनेजा की 'मानवता की मूर्ति-मदर टेरेसा', श्री अमित लाठर की 'जो हुआ अच्छा हुआ', श्री हरभजन सिंह की 'आज' सभी रचनाएं सराहनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आभा' के 79-82वें संयुक्तांक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा सुंदर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेष रूप से श्रीमती पूजा सिंह मंडल द्वारा लिखा गया लेख 'चांद की ओर भारत के बढ़ते कदम-चंद्रयान-2' अत्यंत रोचक है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु संपादक मंडल को ढेर सारी शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2 गवर्नमेण्ट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता-700001

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिंदी पत्रिका 'आभा' इस कार्यालय को प्राप्त हुई है। संपादक मंडल का प्रयास सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत ही आकर्षक है। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं प्रभावी, सारगर्भित व पठनीय हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के आगामी अंकों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

महालेखाकार का कार्यालय (आ.व.रा.ले.प.) कर्नाटक, ऑडिट भवन, 'ए' ब्लॉक, डाक थैली सं. 5398, बेंगलूरू-560001

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'आभा' का अंक 79-82 प्राप्त हुआ। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं अत्यंत सुपाठ्य, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। ये सभी रचनाएं अत्यंत रुचिकर तथा प्रासंगिक भी हैं।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में से श्रीमती पूर्णिमा सूद का आलेख 'प्रेरणा', सुश्री कुसुम पांचाल की कविता 'भीगी पलकें', श्री अविनाश पासी की लघु कथा 'तांबे का सिक्का', श्री अमित लाठर का लेख 'जो हुआ अच्छा हुआ', श्री गुरू सरूप बंसल की कविता 'रक्तदान', डॉ लाखा राम का आलेख 'आज का अंक-केन्द्रित परीक्षा तंत्र एवं प्रतिभा का अवमूल्यन', श्री मनु अनेजा की कविता 'हमारे सैनिक', सुश्री पूजा सिंह मंडल द्वारा रचित 'चांद की ओर भारत के बढ़ते कदम-चन्द्रयान-2', श्री प्रेम सिंह की कविता 'गंगा अवतरण', सुश्री निशा ढींगरा का लेख 'भारतीय योग', श्री गौतम की कविता 'लक्ष्य की ओर', श्री धर्मवीर सिंह का लेख 'स्वास्थ्य ही जीवन है', श्री अंकित खोखर की कविता 'बेटियां', आदि विशिष्ट रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

महानिदेशक, लेखा-परीक्षा का कार्यालय, केंद्रीय, कोलकाता, जि.आई. प्रेस बिल्डिंग, 8 किरण शंकर राय रोड (1म मंजिल), कोलकाता-700001

आपकी कार्यालयी पत्रिका 'आभा' की प्रति प्राप्त हुई। अतः आभार स्वीकार करें।

सदैव की भांति आपकी पत्रिका में संकलित सभी सचनाएं उत्कृष्ट एवं उच्च स्तरीय हैं। छाया चित्रों का संकलन अति उत्तम है। सुश्री पूर्णिमा सूद जी का लेख 'प्रेरणा', श्री अमित लाठर जी का लेख 'जो हुआ अच्छा हुआ', श्री अविनाश पासी जी का लेख 'मां-बाप', सुश्री पूजा सिंह मंडल जी का लेख 'चांद की ओर भारत के बढ़ते कदम-चन्द्रयान-२' और श्री प्रेम सिंह जी की कविता 'गंगा अवतरण' पत्रिका में विशेष रूप से सराहनीय हैं।

हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिक 'आभा' के उज्ज्वल भविष्य के लिए 'सुगंधा' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, प्लॉट नं. 21, सैक्टर 17, चण्डीगढ़

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आभा' के 79-82वें अंक वर्ष 2019-20 की दो प्रतियां प्राप्त हुई। पत्रिका की यह प्रति भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी सचनाएं पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्तवपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिंदी पत्रिका 'आभा' के 79-82वें अंक हमारे कार्यालय को प्राप्त हुआ है, तदहेतु धन्यवाद। इस अंक में समाविष्ट रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। विशेषकर श्री मनु अनेजा का लेख 'मानवता की मूर्ति-मदर टेरेसा', श्री अविनाश पासी की लघु कथा 'तांबे का सिक्का', श्री ललित कुमार की कविता 'जल ही जीवन है' जैसी रचनाएं बहुत पसंद आई हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाओं के साथ।

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) ओडिशा, भुवनेश्वर

आभा परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री फ़ैसल इमाम,

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा

संरक्षक

श्री के.एस. नरसिंहा प्रसाद,

उप-महालेखाकार (प्रशासन)

प्रधान संपादक

श्री धर्मवीर सिंह,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक

श्री कृष्ण सिंह,

हिंदी अधिकारी

उप-संपादक

सुश्री पूर्णिमा सूद, पर्यवेक्षक

सहायक-संपादक

श्री राकेश रंजन मिश्रा,

वरिष्ठ अनुवादक

श्री देवता दीन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्री सुदर्शन सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्री देवीदत्त जोशी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

डॉ. लाखा राम, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

स्वत्वाधिकार

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा

प्रकाशन: "आभा" हिंदी पत्रिका

मूल्य- राजभाषा हिंदी के प्रति सत्य-निष्ठा

संपादकीय

कवि इकबाल ने क्या सुंदर लिखा है - 'हिंदी हैं हम, वतन है हिंदोस्तां हमारा'। इसी भावना से प्रेरित होकर संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। परंतु यह सर्वविदित है कि सात दशक बाद भी राजभाषा हिंदी की स्थिति में आशानुकूल सुधार होना वांछित है। यह अवधारणा जोर पकड़ती जा रही है कि अंग्रेजी जानने वाले ज्यादा शिक्षित हैं और अंग्रेजी न जानने वाले अशिक्षित। जब तक देशवासी इस मानसिकता से उबर नहीं जाते तब तक 'हमारा भारत और हम भारतीय' को चरितार्थ नहीं किया जा सकता है। दुनिया के हर देश की अपनी भाषा है और देशवासी अपनी भाषा बोलने में गौरवान्वित महसूस करते हैं। ऐसा ही लक्ष्य हमारे सामने है जिसे हमें जल्द से जल्द प्राप्त करना है।

भारत सरकार की राजभाषा होने के नाते सभी केंद्रीय कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए विभिन्न माध्यमों से प्रयास किए जा रहे हैं। विभागीय पत्रिकाएं इसका एक उदाहरण है। हमारे कार्यालय की पत्रिका 'आभा' का 83-86 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इसमें कार्यालय की वर्षभर की गतिविधियों के साथ-साथ विभागीय कार्मिकों तथा उनके मित्रों अथवा परिवारिक सदस्यों से प्राप्त रचनाएं कहानी, लेख या कविता के रूप में शामिल की गई हैं। आशा है कि आप इन्हें पसंद करेंगे। इस पत्रिका के द्वारा न केवल रचनाकारों को अपनी प्रतिभा सबके सामने लाने का अवसर प्राप्त होता है बल्कि यह आपस में एक संपर्क सूत्र का माध्यम भी बनता है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु यह पत्रिका आप सबके सहयोग से निरंतर प्रकाशित की जा रही है। पत्रिका परिवार के उत्साहवर्धन हेतु पाठकों से प्राप्त बहुमूल्य प्रतिक्रियाओं के लिए हार्दिक धन्यवाद। भविष्य में भी इसी तरह अपने बहुमूल्य सुझाव प्रेषित कर पत्रिका को और रुचिकर बनाने में अपना सहयोग अवश्य दें। हम अपने उच्चाधिकारियों के प्रति आभार प्रकट करते हैं जिनके मार्गदर्शन से पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया है। हरियाणा के मुख्यमंत्री तथा अन्य अधिकारीगण ने अपने मूल्यवान संदेश भेजकर पत्रिका के गौरव को बढ़ाया है, हम उनके अति आभारी हैं। पत्रिका की निरंतरता बनाए रखने हेतु सबके पूर्ण सहयोग के लिए धन्यवाद। राजभाषा के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

प्रधान संपादक

आभा परिवार

बाएं से दाएं : (बैठे हुए) सुश्री रेणु चावला, सचिव, महालेखाकार, श्री लखबिंदर सिंह चहल, उप-महालेखाकार, श्री गुरप्रीत वालिया, वरिष्ठ उप-महालेखाकार, सुश्री साहिल सांगवान, उप-महालेखाकार, श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार, सुश्री श्वेता मिश्रा, उप-महालेखाकार, श्री के. एस. नरसिंहा प्रसाद, उप-महालेखाकार (प्रशासन), श्री यज्ञदत्त शर्मा, कल्याण अधिकारी।

बाएं से दाएं : (खड़े हुए) श्री अशोक सिंगला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (महालेखाकार सचिवालय), श्री राकेश रंजन मिश्रा, वरिष्ठ अनुवादक, श्री धर्मवीर सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, सुश्री पूर्णिमा सूद, पर्यवेक्षक, श्री कृष्ण सिंह, हिंदी अधिकारी।

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

महावीर प्रसाद द्विवेदी

कार्यालय के प्रांगण से

वर्ष के दौरान कार्यालय में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इनमें बहुत उत्साह से भाग लिया। इनका विवरण इस प्रकार है:

हिंदी पखवाड़ा: दिनांक 13.09.2019 से 26.09.2019 तक कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इसका उद्घाटन 13.09.2019 को वरिष्ठ उप-महालेखाकार महोदया ने दीपशिखा प्रज्वलित करके किया। उन्होंने कार्यालय के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि सरल एवं सुगम हिंदी का प्रयोग किया जाए ताकि हिंदी एक कलिष्ट भाषा प्रतीत न हो और आसानी से कार्यालय के काम-काज में प्रयुक्त की जा सके। कार्यालय के सदस्यों के लिए हिंदी पुस्तकों तथा अन्य विभागों से प्राप्त हिंदी पत्रिकाओं की प्रदर्शनी लगाई गई ताकि इच्छुक पाठक पढ़ने के लिए पुस्तकें हिंदी कक्ष से जारी करवा सकें। कार्यालय के कार्य में 20,000 से अधिक हिंदी शब्दों का प्रयोग करने पर प्रथम (1) द्वितीय (2) एवं तृतीय (3) नकद पुरस्कार वितरित किए गए। पखवाड़े के दौरान, कंप्यूटर पर हिंदी टंकण, हिंदी निबंध लेखन, हिंदी श्रुतलेख एवं शब्द ज्ञान, अंताक्षरी तथा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी इत्यादि प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने विशेष रूचि दिखाई तथा बढ़-चढ़ कर भाग लिया। पखवाड़े का समापन समारोह 26.09.2019 को आयोजित किया गया। महालेखाकार महोदय ने हिंदी पखवाड़ा के सफल आयोजन के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई दी तथा पुरस्कारों से उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर हिंदी पत्रिका 'आभा' का विमोचन भी किया गया।

राष्ट्रीय एकता दिवस: 31.10.2019 को राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर भ्रष्टाचार रोकने संबंधी शपथ दिलवाई गई।

रक्तदान शिविर: कार्यालय में दिनांक 06.11.2019 को जी.एम.सी.एच., सैक्टर-32, चण्डीगढ़ के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा 130 यूनिट रक्तदान किया गया।

नववर्ष: कार्यालय में 01.01.2020 को नववर्ष मनाया गया। ईश्वर की स्तुति (अरदास) से कार्यक्रम का आरंभ किया गया। महालेखाकार महोदय ने कार्यालय के सभी सदस्यों को नववर्ष की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर जलपान का आयोजन भी किया गया।

खेल: 07.01.2020 से 09.01.2020 को चण्डीगढ़ में उत्तर क्षेत्रीय आई.ए. एंड ए.डी. फुटबाल प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें ए.जी. हरियाणा की टीम विजेता रही।

कार्यालय द्वारा उत्तर क्षेत्रीय आई.ए. एंड ए.डी. क्रिकेट टूर्नामेंट 2019-20, 16 फरवरी से 18 फरवरी 2020 तक आयोजित किया गया जिसमें छः कार्यालयों ए.जी. हरियाणा, ए.जी. पंजाब, ए.जी. हिमाचल प्रदेश, ए.जी. जम्मू-कश्मीर, ए.जी. उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली आडिट की टीमों ने भाग लिया। टूर्नामेंट इस कार्यालय द्वारा लगभग 10 वर्ष पश्चात् आयोजित करवाया गया। इस टूर्नामेंट में ए.जी. हरियाणा की टीम विजेता घोषित हुई तथा ए.जी. पंजाब की टीम द्वितीय स्थान पर रही।

गणतंत्र दिवस: कार्यालय में 26.01.2020 को गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया। गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर कार्यालय के सदस्यों के बच्चों के लिए ड्राईंग/पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

समारोह की अध्यक्षता महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा द्वारा की गई। इस अवसर पर देशभक्ति के गीत गाए गए तथा बाल-कलाकारों द्वारा फैंसी ड्रैस की प्रस्तुति दी गई। वर्ष के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा कार्यक्रम में भाग लेने वाले कलाकारों एवं बाल-कलाकारों को महालेखाकार महोदय द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए।

ए.डी.ए.आई. महोदय का दौरा: 24.02.2020 से 06.03.2020 तक ए.डी.ए.आई. महोदय द्वारा कार्यालय का दौरा किया गया।

सद्भावना दिवस: 20.08.2020 को पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी का जन्म दिवस सदभावना दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपने-अपने अनुभाग में सदभावना बनाए रखने की शपथ ली गई।

स्वतंत्रता दिवस: कार्यालय परिसर में 15 अगस्त 2020 को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा के सहयोग से स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया। डॉ आभा, विभागाध्यक्ष, पैथोलॉजी जनरल अस्पताल, सैक्टर 16, चंडीगढ़ इस समारोह की मुख्य अतिथि थीं। श्रीमती नमिता सेखों, उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा ध्वजारोहण किया गया तथा दोनों कार्यालयों के सदस्यों द्वारा राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यालय में सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र दिए गए। कार्यक्रम के अंत में अतिथियों द्वारा उपस्थित लोगों को सम्बोधित किया गया तथा उपहार दिए गए।

हिंदी अनुवादकों के लिए कार्यशाला: दिनांक 28.01.2020 को प्रात: 10.15 से 1.00 बजे तक ढाई घंटे की अवधि का एक त्वरित (क्रैश) अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें इस कार्यालय और चंडीगढ़ स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। इसमें केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, दिल्ली के श्री राकेश कुमार पाठक ने व्याख्यान दिया।

प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती।

नववर्ष, फुटबाल टीम

गणतंत्र दिवस

लोकतान्त्रिक व्यवस्था की एक खामोश क्रान्ति - प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण प्रणाली

मुनीष भाटिया

प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण सरकार की एक बड़ी सुधार पहल है ताकि शासन से लोगों को बेहतर और समय पर सरकारी लाभ वितरण सुनिश्चित किया जा सके। यह सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में मजदूरी भुगतान, ईंधन सब्सिडी, खाद्य अनाज और पेंशन लाभ पहुंचाने की एक सुधारात्मक व्यवस्था है।

राष्ट्रीय समिति में लिए गए निर्णय के अनुसार देश में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण परियोजना का आरम्भ योजना आयोग द्वारा जनवरी 2013 में किया गया। शुरुआती दौर में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डी.बी.टी.) के दायरे में जो योजनायें लाई गईं, वे छात्रवृत्ति, महिला, बाल और श्रम कल्याण से संबंधित थीं। इसके अलावा एल.पी.जी. में इस योजना की शुरुआत 01 जून 2013 से की गई।

डी.बी.टी. विज़न एक शासन व्यवस्था है जो निष्पक्ष, पारदर्शी, कुशल और विश्वसनीय तरीके से पात्र व्यक्तियों और परिवारों के अनुकूल सरकार का जनता के लिए एक माध्यम का निर्माण करती है। सरकार द्वारा विभिन्न समाज कल्याण लाभकारी योजनाओं में सुधार की पहल और दोहराव पर अंकुश लगाना, लाभार्थी का सटीक लक्ष्यीकरण और भुगतान में देरी को कम करना इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य है, जिसके लिए लाभार्थियों का आधार लिंक बैंक खाता खोलना अनिवार्य रखा गया है।

शासन द्वारा जन धन आधार मोबाइल (जे.ए.एम.) त्रिशक्ति के माध्यम से प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण प्रणाली को बड़े पैमाने पर लागू करना है। जे.ए.एम., एक मॉडल है जिसमें जन धन योजना, आधार और मोबाइल प्रौद्योगिकी का एकीकरण शामिल है, जो शासन व्यवस्था को बड़े पैमाने पर डी.बी.टी. को लागू करने में मदद करता है। जन धन आधार मोबाइल कैशलेस और समय पर सामाजिक सुरक्षा लाभों के हस्तांतरण के लिए इस प्रणाली को सक्षम बना रहा है।

बिजनेस कॉरस्पॉन्डेंट्स (बी.सी.) के माध्यम से प्रत्यक्ष लाभ का हस्तांतरण सामाजिक सुरक्षा, पेंशन सेवाओं जैसे नकद लेन-देन के लिए अधिकृत किया गया है जहां बैंक की शाखा नहीं है ताकि सरकारी लाभ, उपयुक्त लाभपात्र तक समयबद्धता से एवं सुचारू रूप से पहुँच सके। प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण को निम्नलिखित तीन प्रकार की श्रेणियों में रखा गया है।

व्यक्तिगत लाभार्थी को नकद हस्तांतरण: इस श्रेणी में उन योजनाओं के घटक शामिल हैं जिनमें नकद लाभ सरकार द्वारा व्यक्तिगत लाभार्थियों को हस्तांतरित किए जाते हैं। जैसे पहल (एल.पी.जी. के लिए प्रत्यक्ष लाभ अंतरण), महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा), राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (एन.एस.ए.पी.), आदि। इस लाभ का हस्तांतरण मंत्रालय अथवा विभाग से लाभार्थियों को नकद रूप में विभिन्न माध्यमों से होता है।

वस्तुपरक प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण: सरकार या उसके एजेंट द्वारा सार्वजनिक वितरण के लिए सामान खरीदने और लक्षित लाभार्थियों के लिए सेवाएं प्रदान करने के लिए किए गए व्यय द्वारा प्रत्यक्ष लाभ अंतरण पद्धति को इस श्रेणी में रखा जाता है। इस श्रेणी के अंतर्गत व्यक्तिगत लाभार्थियों को मुफ्त में या रियायती दरों पर ये सामान या सेवाएं प्रदान की जाती हैं। उदाहरण के लिए, सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पी.डी.एस.) के तहत, फूड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (एफ.सी.आई.) द्वारा उचित मूल्य की दुकानों के लिए खाद्यान्न की खरीद इस श्रेणी में आती है।

अन्य श्रेणी: इस श्रेणी में वेतन, सम्मान, प्रोत्साहन, आदि के रूप में सामुदायिक श्रमिकों और गैर-सरकारी संगठनों, आदि के लिए किए गए हस्तांतरण शामिल हैं,

जो सरकारी योजनाओं के सफल कार्यान्वयन के लिए सहायक हैं। इस तरह के सहायकों में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत आशा कार्यकर्ता, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों के शिक्षक, शहरी स्थानीय निकायों के स्वच्छता कर्मचारी आदि शामिल हैं। प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण प्रणाली अपने निम्नलिखित सप्त उद्देश्यों को फलीभूत करते हुए शासन और जनता के बीच आकाशीय सप्त तारामंडल समूह की भान्ति अपनी आभा को फैला रही है:

1. प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण से सरकारी धन जो कि विभिन्न माध्यम से लाभार्थी तक पहुँचता था वह अब सीधे तौर पर पात्र के पास पहुंचने लगा जिससे सरकारी धन की बचत होनी आरम्भ हो गई।
2. विभिन्न मध्यस्थ समाप्त होने से निर्धारित समय से पात्र लाभार्थी तक पहुँचाने लगा।
3. विभिन्न डेटाबेस के आपस में लिंक होने से लाभार्थी का सटीक लक्ष्यीकरण होने लगा।
4. बिचौलियों की सहभागिता को खत्म करके पारदर्शिता लाने से लाभार्थी के बैंक खाते में प्रत्यक्ष लाभ का हस्तांतरण होना आरम्भ हो गया।
5. डुप्लीकेट और नकली अथवा अपात्र लाभार्थियों का पता चलना आरम्भ हो गया।
6. गरीब का राशन उपयुक्त गरीब पात्र लाभार्थी के हाथ तक पहुंच आधार लिंक मशीन से वितरण के माध्यम से सरलीकृत हो गया।
7. उर्वरक एवं किसान लाभ योजनाएं तथा पहल के माध्यम से कालाबाजारी पर भी अंकुश लगना आरम्भ हो गया और बाजार से इन वस्तुओं की किल्लत ख़त्म होनी आरम्भ हो गई।

इस तरह देखा जाए तो आधुनिक भारत की लोकतान्त्रिक व्यवस्था में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण एक मूक क्रान्ति सिद्ध हो रही है जिससे न केवल सरकारी धन की बचत हुई ही है बल्कि उपयुक्त पात्र के पास समय परक व्यवस्था के अंतर्गत पूरे लाभ का हस्तांतरण होना आरम्भ हो गया है।

माता-पिता का सम्मान

अविनाश पासी

एक पुत्र अपने वृद्ध पिता को रात्रि भोज के लिए अच्छे रेस्टोरेंट में लेकर गया। खाने के दौरान वृद्ध पिता ने कई बार भोजन अपने कपड़ों पर गिराया। रेस्टोरेंट में बैठे खाना खा रहे दूसरे लोग वृद्ध को घृणा की नजरों से देख रहे थे पर उसका पुत्र शांत था।

खाने के बाद पुत्र बिना किसी शर्म के वृद्ध को वाशरूम ले गया। उनके कपड़े साफ किए, चेहरा साफ किया, बालों में कंघी की, चश्मा पहनाया और बाहर लाया। सभी लोग खामोशी से उसको देख रहे थे। फिर उसने बिल का भुगतान किया और वृद्ध के साथ बाहर जाने लगा। तभी डिनर कर रहे एक अन्य वृद्ध ने उसे आवाज दी और पूछा क्या तुम्हें नहीं लगता कि यहां अपने पीछे तुम कुछ छोड़कर जा रहे हो। उसने जवाब दिया नहीं सर मैं कुछ भी छोड़कर नहीं जा रहा हूं। वृद्ध ने कहा बेटे तुम यहां प्रत्येक पुत्र के लिए एक शिक्षा, सबक और प्रत्येक पिता के लिए एक उम्मीद छोड़कर जा रहे हो। आमतौर पर हम लोग अपने बुजुर्ग माता-पिता को अपने साथ बाहर ले जाना पसंद नहीं करते और कहते हैं कि क्या करोगे आपसे ठीक से चला तो जाता नहीं, खाया भी नहीं जाता। आप तो घर पर ही रहो वही अच्छा होगा। लेकिन क्या आप भूल गए कि जब आप छोटे थे और आपके माता-पिता आपको अपनी गोद में उठाकर ले जाया करते थे, आप जब ठीक से खा नहीं पाते थे तो मां आपको अपने हाथ से खाना खिलाती थी और खाना गिर जाने पर डांट नहीं प्यार करती थी। फिर वही माता-पिता बुढ़ापे में बोझ क्यों लगने लगते हैं? माता-पिता भगवान का रूप होते हैं। उनकी सेवा कीजिए और प्यार दीजिए क्योंकि एक दिन आप भी बूढ़े होंगे।

भारतीय साहित्य और संस्कृति को हिंदी की देन बड़ी महत्वपूर्ण है।

भाई-भतीजावाद

पूर्णिमा सूद

उद्यमेन ही सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथ:।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशयन्ति मुखे मृग:।।

भाई-भतीजावाद (Nepots।m) समय-समय पर चर्चा का विषय रहा है। हाल ही में फिल्म इंडस्ट्री से एक दु:खद समाचार से मीडिया पर इस बारे में विचारों की जैसे बाढ़ सी आ गई। सभी तरफ से इस बारे में टिप्पणियां की जाने लगी। एक अभिनेता ने यह भी कहा कि यह महज मेरी किस्मत है कि मैं एक अभिनेता परिवार में पैदा हुआ हूं। बहुत से पाठकों ने इसके विरोध में लिखा। यदि हम ध्यान से सोचें तो कुछ हद तक यह सही प्रतीत होता है।

रामायण और महाभारत के काल से हम इसी परंपरा को पढ़ते और जानते आए हैं कि राजा के बेटे का ही राजतिलक किया जाता था, भावी राजा बनने के लिए। कर्ण और एकलव्य ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें इच्छित गुरू से शिक्षा तक ग्रहण करने का अधिकार नहीं था क्योंकि वे क्षत्रिय नहीं थे या उनका संबंध राजपरिवार से नहीं था। इतिहास इस बात का गवाह है कि चाहे वह मौर्यकाल, गुप्तकाल या फिर मुगलकाल रहा हो राज्य की बागडोर राजा के पुत्र या कभी-कभी पुत्री जैसे रजिया सुल्तान या झांसी की रानी के हाथ में ही दी जाती थी। यही परंपरा थी और यही सुविधाजनक या उचित माना जाता था क्योंकि कोई भी गुण हो, या तो वे आनुवंशिक होते हैं या बाल्यकाल से परिवार के तौर-तरीके देखकर बालक स्वयं ही अपना लेते हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें शुरू से ही इसी प्रकार की शिक्षा दी जाती है।

प्राचीन काल में समाज को वर्गों में बांटा गया था। उसके अनुसार भी क्षत्रिय वंश में पैदा होने वाली संतान में वीरता का गुण प्राकृतिक रूप से रहता है, इसीलिए वे सेना में जाने या लड़ने के लिए समर्थ थे। अन्य वर्गों में भी ऐसा ही प्रचलित था। यह प्रचलन आज तक कमोबेश तौर पर चलता आ रहा है। अधिकतर परिवारों में डॉक्टर

की संतान डॉक्टर, वकील के बच्चे वकील, खिलाड़ी की औलाद खिलाड़ी, व्यावसायिक घरानों के वारिस व्यवसायी और राजनीतिज्ञों की पीढ़ी राजनीति में जाती है। इसी प्रकार, अभिनेताओं के बच्चे ज्यादा मामलों में अभिनेता ही बन रहे हैं क्योंकि कला या तो उन्हें विरासत में मिली है या फिर घर में कला के माहौल के चलते उनकी रूचि भी उस ओर हो जाती है। वैसे देखा जाए तो सभी माता-पिता जीवन में जो भी अपनी मेहनत से कमाते हैं, बच्चे के लिए छोड़ जाते हैं, जिसका लाभ उनकी अगली पीढ़ी जीवन भर किसी न किसी रूप में उठाती है।

किसी भी कला में पारंगत होने के लिए केवल पारिवारिक गुण या पहुंच काफी नहीं होती, मेहनत एवं लगन भी जरूरी है। लगन एवं मेहनत के बिना अपनी श्रेणी सिद्ध नहीं की जा सकती। इस सदी के प्रसिद्ध महानायक अमिताभ बच्चन को सफल होने से पहले कई असफलताओं का सामना करना पड़ा। उनसे जूझकर ही वे परिश्रम और समय की पाबंदी जैसे गुणों के साथ आगे बढ़ पाए और उस स्थान पर विराजमान हुए जहां पर आज तक कोई अन्य कलाकार नहीं पहुंच पाया। शाहरूख 'किंग खान' रातों-रात नहीं बने, इसके पीछे उनका बरसों का अथक परिश्रम, लगन एवं कुछ बनने का जज्बा था। अभिषेक बच्चन को अवसर तो आसानी से मिले परंतु वे अपने पिता जैसा मुकाम हासिल नहीं कर पाए। ऐसे और कई अभिनेता-पुत्र या पुत्रियों के उदाहरण हैं जो एकाध फिल्म के बाद गुमनामी में खो गए जबकि फिल्म जगत के बाहर से आने वाले कई कलाकार ऊंचाइयों को छूने में कामयाब हुए हैं।

इसी प्रकार खेल जगत में क्रिकेट के सुप्रसिद्ध खिलाड़ी सुनील गावस्कर के बेटे पिता की तरह सफल नहीं हो

पाए। यहां तक कि क्रिकेट के 'गॉड' कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर के पुत्र भी पिता द्वारा हासिल श्रेणी तक पहुंचने में असफल रहे। व्यवसाय जगत में धीरू भाई अंबानी से सभी परिचित हैं जिन्होंने 'शून्य' से शुरू करके अपने व्यापार का इतना विस्तार किया कि भारत के सबसे धनवान व्यक्ति का दर्जा प्राप्त किया। उनके दो पुत्र हैं - मुकेश अंबानी उसी व्यवसाय को और अधिक ऊंचाइयों पर ले गए परंतु अनिल अंबानी उसे संभाल नहीं पाए। एक ही पिता की संतान होने, समान रूप से परवरिश होने एवं समान अवसर मिलने पर भी जीवन में किसी स्थान पर पहुंचना अपनी मेहनत पर ही निर्भर करता है। अधिकतर राजनीतिज्ञों की संतानें बड़ी होकर उसी क्षेत्र में शामिल तो होती हैं, परंतु उस क्षेत्र में सफल हों, यह आवश्यक नहीं है।

आए दिन हम पढ़ते-सुनते हैं कि किसी श्रमिक या माली के बेटे ने पढ़ाई में या खेल में अव्वल स्थान प्राप्त किया। यानि अब बढ़ई का बेटा बढ़ई और लुहार का पुत्र लुहार बनने का समय चला गया। अब समय की मांग है कि माता-पिता बच्चों को अपना कार्यक्षेत्र स्वयं चुनने दें क्योंकि जहां उनकी रुचि हो, वहीं वे सर्वोत्तम परिणाम दिखा पाएंगे। जिनमें मेहनत एवं प्रतिभा जैसे गुण विद्यमान हैं वे हतोत्साहित न हों क्योंकि सफलता ज्यादा देर उनसे दूर नहीं रह सकती। एक दिन उन्हें अपनी पहचान अवश्य मिलेगी। समाज में जो समर्थ हैं उनका यह कर्तव्य बनता है कि अपने आस-पास जिसमें भी प्रतिभा देखें उसे आर्थिक या अन्य रूप में आगे बढ़ने में सहायता अवश्य करें, तभी हम समाज, देश व दुनिया को बेहतर बना सकेंगे।

किसानों के मसीहा - सर छोटू राम

मनु अनेजा

भारत की भूमि हमेशा ही वीरों की भूमि रही है। देश के हर भाग से स्वतंत्रता सेनानियों ने आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऐसे ही हरियाणा के एक वीर स्वतंत्रता सेनानी वकील-पत्रकार थे जिनका नाम है- "सर छोटू राम"।

सर छोटू राम जी का जन्म रोहतक के छोटे से गांव गढ़ी सांपला में बहुत ही साधारण परिवार में हुआ था। अपने भाइयों में सबसे छोटा होने के कारण परिवार के लोग उन्हें "छोटू" कहकर पुकारते थे। रोहतक में उनके निवास स्थान के पास वाले चौक को छोटू राम चौक के नाम से जाना जाता है। झज्जर के मिडिल स्कूल में प्राइमरी शिक्षा प्राप्त करने के बाद जब उन्होंने क्रिश्चियन मिशन स्कूल, दिल्ली में प्रवेश लिया तो शिक्षा का खर्च वहन करने हेतु जैसे ही वह अपने पिता के साथ साहूकार के पास कर्जा लेने गए तो उन्हें साहूकारों के चंगुल में फंसे किसानों के दर्द का अहसास हुआ। उसके बाद उन्होंने किसानों के हित के लिए अनेक कदम उठाए और 1911 में लॉ की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात उनकी ताकत और बढ़ गई।

साहूकार पंजीकरण एक्ट-1934, गिरवी जमीनों की मुफ्त वापसी एक्ट-1938, कृषि उत्पाद अधिनियम-1938, व्यवसाय श्रमिक अधिनियम-1940, कर्जा माफ़ी अधिनियम-1934 के द्वारा उन्होंने किसानों के हित के लिए अनेक कदम उठाए। उन्होंने जाट जाति के उत्थान के लिए 'जाट गजट' प्रचलित किया था। इसके अतिरिक्त उन्होंने ही भाखड़ा बांध का प्रस्ताव रखा था। सतलुज के पानी का अधिकार बिलासपुर के राजा के पास था। उन्होंने ही बिलासपुर के राजा के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस महान व्यक्ति का दिनांक 9 जनवरी, 1945 को देहांत हो गया।

चंद्रमा एवं उपवास

तिलक राज जसवाल

जिस प्रकार पृथ्वी पर लगभग 75 प्रतिशत जल विद्यमान है उसी प्रकार मानव शरीर में भी लगभग 72 प्रतिशत जलतत्व विद्यमान है। जैसे जल पर सर्दी एवं गर्मी का प्रभाव पड़ता है उसी प्रकार हमारे शरीर में स्थित जलतत्व पर भी सर्दी एवं गर्मी का प्रभाव पड़ता है। मानव शरीर की विशेषता है कि चाहे जितनी भी गर्मी या सर्दी हो हमारे शरीर का तापमान 98.4 फारेनहाइट (37 सेलसियस) बना रहता है अर्थात हमारे शरीर में एयरकंडीशनर एवं हीटर दोनों मौजूद होते हैं। वातावरण की गर्मी एवं शारीरिक क्रियाओं के कारण दिन के समय हमारे शरीर का पानी गर्म हो जाता है एवं रात में ठंडा हो जाता है। ठंड से उत्पन्न जलतत्व की नमी प्रकृति में ओस के रूप में दिखाई देती है, यही नमी हमारे सिर या फेफड़ों में जाती है तो छींक या नाक से पानी के रूप में बाहर निकलती है। अत: प्रात:काल में यदि कुछ छींकें आती हैं तो यह अच्छे स्वास्थ्य की निशानी मानी जाती है। मानव शरीर एक वर्ष में दो बार अतिरिक्त नमी/पानी को सर्दी-जुकाम व छींक के रूप में बाहर निकालने की क्रिया करता है। साधारणत: यह क्रिया तीन-चार दिनों में स्वयं ही ठीक हो जाती है। कहा जाता है कि दवा लेने पर सर्दी छ: दिन में व दवा न लेने पर तीन दिन में ठीक हो जाती है।

मानव शरीर में स्थित रक्त जल की गर्मी द्वारा नियंत्रित होता है जो कि पाचन शक्ति पर आधारित होती है। कमजोर पाचन क्रिया के कारण पेट के भीतर की गर्मी घट जाती है। परिणामस्वरूप शारीरिक जल का वाष्पिकरण कम होता है जिससे जलतत्व की अधिकता के कारण कफ सर्दी फेफड़ों, छाती व गले में एकत्रित हो जाती है। जब यह जल सिर की नसों में जाता है तो सिर दर्द करता है, इसके दुश्चक्र के कारण टान्सिल, ब्रान्काइटिस एवं बुखार आदि व्याधियां हो सकती हैं। इन सबसे बचने के लिए पाचन क्रिया को कमजोर नहीं होने देना चाहिए एवं सुपाच्य भोजन खाना चाहिए।

चंद्रमा हमारी पृथ्वी के सबसे निकट स्थित है, इसका पृथ्वी पर स्थित जल पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। चंद्रमा के पृथ्वी के इर्द-गिर्द परिभ्रमण के कारण ही समुद्र में ज्वार-भाटा आता है। शुक्ल पक्ष में चतुर्थी, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा एवं कृष्ण पक्ष में चतुर्थी, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी, अमावस्या के दिनों में चंद्रमा, पृथ्वी और मानव शरीर के ठीक सामने होता है। इस समय ही विशेष ज्वार-भाटा आता है एवं शरीर का पानी दूषित होता है। इस दुष्प्रभाव से बचने के लिए भारतीय धर्म परंपरा में उपवास का प्रावधान बनाया गया था। इन दिनों में जल का कम से कम सेवन करना, दिन में एक बार भोजन करना तथा साग-सब्जियां, जिनमें 90 प्रतिशत जल हो, का कम से कम उपयोग करने की बात कही गई। पूर्णिमा तथा अमावस्या के दिनों में शरीर में जलतत्व की वृद्धि हो जाती है, अग्नि तत्व कमजोर हो जाता है तथा वायुतत्व अधिक हो जाता है, जिसका मानव शरीर एवं मस्तिष्क पर बुरा असर पड़ता है। इन दुष्प्रभावों एवं रोगों से बचने के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिए:

1. हल्का एवं सुपाच्य भोजन गर्म एवं ताजा खाना चाहिए।
2. गर्म जल थोड़ी मात्रा में कुछ समय के अंतराल पर लेते रहना चाहिए।
3. गर्म जल में नमक डालकर गरारे करने चाहिए।
4. पूर्णिमा एवं अमावस को उपवास करना चाहिए तथा अधिक जलतत्व वाली साग-सब्जियों एवं फलों का

उपयोग कम करना चाहिए।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय करें:

(क) एक आसान एक्युप्रेशर के अंतर्गत दोनों हाथों की मुट्ठियां सांस भरते हुए जोर से पांच-छः सेकिंड के लिए बंद करें तथा अंगूठे से प्रेशर डाले फिर दो-तीन सेकिंड के लिए मुट्ठियां खोल दें, इस प्रकार की प्रक्रिया पांच मिनट तक दोहराते रहें, यह एक्युप्रेशर प्रक्रिया अनेक रोगों को ठीक करने में सहायक है।

(ख) रोग प्रतिरोधन क्षमता बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थ:

(I) विटामिन सी के लिए नींबू, संतरा, सेब एवं किन्नू आदि का सेवन करें।

(II) ड्राई फ्रूटस बादाम, अखरोट, मुन्नका, खजूर एवं छुहारा आदि का सेवन करें।

(III) अदरक, लहसुन, प्याज एवं हरी मिर्च का उपयोग करें।

(IV) अंकुरित दालों जैसे चना, मूंग एवं अन्य दालों का नमक, हरी मिर्च एवं नींबू रस डालकर सेवन करें।

(V) मौसमी सब्जियों एवं फलों को साफ करके अर्थात गुनगुने पानी में 10-15 मिनट डालकर अच्छी तरह से धोकर उपयोग करें।

(VI) प्राणायाम जैसे लंबी सांस लेना, कपाल भाती, अनुलोम-विलोम, भ्रांमरी आदि करें।

(VII) शारीरिक क्षमता के अनुसार व्यायाम एवं आसन करें।

1857 की क्रांति के उद्घोषक - मंगल पांडे

ललित कुमार

1857 की क्रांति भारत के स्वतंत्रता संग्राम की एक महान घटना मानी जाती है। यद्यपि क्रांति असफल रही, किंतु अंग्रेजी हुकूमत को यह एहसास दिलाने में जरूर कामयाब रही कि अगर भारतीय एकजुट होकर उनके विरुद्ध लड़े तो उनका भारत में शासन करना मुश्किल होगा।

इतिहास में इस क्रांति का विवरण "मंगल पांडे" के विवरण के बिना अधूरा रहेगा। मंगल पांडे जी का जन्म नगवा, बलिया, उत्तर प्रदेश के एक ब्राह्मण परिवार में 19 जुलाई 1827 को हुआ था। वे ईस्ट इंडिया कंपनी की 34वीं बंगाल इन्फेंट्री के सिपाही थे। 1857 के विद्रोह का प्रारंभ एक बंदूक की वजह से हुआ। सिपाहियों को एनफील्ड बंदूकें दी गईं। एनफील्ड बंदूक को भरने के लिए कारतूस को दांतों से काटकर खोलना पड़ता था। कारतूस के बाहरी आवरण में चर्बी होती थी। ऐसा माना गया था कि यह गाय व सूअर की चर्बी थी। हिंदू लोग गाय को पवित्र मानते हैं और मुस्लिमों में सूअर का मांस खाने की मनाही है। इस बात से बैरकपुर परेड मैदान, कलकत्ता के निकट मंगल पांडे ने रेजीमेंट के अफसर "लेफ्टिनेंट बाग" पर हमला कर उसे घायल कर दिया।

मंगल पांडे को 8 अप्रैल 1857 को मात्र 29 वर्ष की आयु में फांसी दे दी गई, किंतु मंगल पांडे जी ने अंग्रेजों के विरुद्ध जो क्रांति की मशाल जलाई थी, अंग्रेज उसे बुझा नहीं पाए। उनकी मृत्यु के बाद विद्रोह मेरठ छावनी समेत पूरे उत्तर भारत में फैल गया, जिससे अंग्रेजों को एहसास हो गया कि भारत पर शासन करना इतना आसान नहीं जितना वे समझते रहे।

ये मंगल पांडे की वीरता ही थी जिससे अंग्रेजों को भारत में 34,735 अंग्रेजी कानून थोपने पड़े ताकि मंगल पांडे सरीखा कोई भारतीय दोबारा उनके विरुद्ध बगावत न कर सके।

कोरोना वरदान है या अभिशाप

प्रिया शर्मा

"कोरोना" एक ऐसी महामारी है जो वर्तमान में न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में अपना अधिकार जमाए बैठी है। पूरा विश्व यह जानता है कि जब-जब किसी महामारी ने धरती पर अपना पैर रखा है तभी सारी मानव जाति को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा किया है। प्राचीनकालीन इतिहास हमें बताता है कि किस प्रकार सिंधु घाटी सभ्यता को एक महामारी ने नष्ट कर दिया था। इतने दशकों में कोई न कोई महामारी धरती पर आती रही है और मानव जाति को विनाश की ओर धकेलती रही है।

'कोरोना" वह घातक बीमारी है जिसकी चपेट में आने पर हम अपने किसी प्रियजन से दूर हो जाते हैं। यह महामारी आज समाज में चारों ओर फैल चुकी है और न जाने कितने लोगों को यह महामारी श्मशान का रास्ता दिखा चुकी है। लेकिन कोरोना हमें प्रकृति का दिया हुआ वरदान सा भी लगता है। यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि एक सिक्के के जैसे दो पहलू होते हैं, ठीक उसी प्रकार कोरोना के कुछ सकारात्मक तो कुछ नकारात्मक पहलू हैं। जिस प्रकार विज्ञान के कुछ लाभ और कुछ हानियां हैं, ठीक उसी प्रकार हम कोरोना के बारे में भी सोच सकते हैं। विज्ञान से हमें बहुत सी हानियां भी होती हैं फिर भी हम उसका सम्मान करते हैं। इसी प्रकार यदि कोरोना के नकारात्मक तथ्यों को छोड़ दिया जाए तो हम कोरोना का भी उतना ही सम्मान करेंगे जितना हम विज्ञान का करते हैं। यहां पर कोरोना के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों तथ्यों के बारे में बात होगी।

कोरोना ने भले ही विश्व में कोहराम मचा दिया है लेकिन अपनों को अपनों के नजदीक ला दिया है। हजारों की संख्या में जो लोग आजीविका कमाने, शिक्षा, व्यवसाय के लिए अपने परिवार से दूर जा चुके थे, उनसे मिलने के लिए, उनके साथ रहने के लिए अपने देश वापस आ गए हैं। जो लोग अपनी दिनचर्या में एक मिनट का समय भी अपने परिवार को नहीं दे पाते थे, वे कोरोना महामारी के कारण ही अपने परिवार के साथ आनंद से दिन व्यतीत कर रहे हैं। इसी महामारी ने समाज से आपसी ईर्ष्या, भेदभाव और छोटे-बड़े का भेद खत्म कर दिया है। इस बात से तो सभी भली-भांति परिचित हैं कि कोरोना जाति, धर्म, अमीर, गरीब नहीं देखता। इसकी नजर में सभी समान हैं जैसे भगवान की नजर में। कोरोना ने हमारे पर्यावरण को भी शुद्ध किया है। इस महामारी ने न केवल वायु प्रदूषण बल्कि जल प्रदूषण के स्तर को भी कम किया है। प्रतिदिन वाहनों से निकलने वाले धुंए के कारण मनुष्य में श्वास रोग उत्पन्न हो रहे थे। वाहनों से निकलने वाली गैस न केवल इंसानों के लिए बल्कि जीव-जंतु व इमारतों के लिए भी हानिकारक थी। आज देश में वायु प्रदूषण का स्तर काफी नीचे गिर गया है।

नदियों, समुद्रों, झीलों का जल भी साफ हो गया है। जो जलीय जीव-जंतु जल प्रदूषण के कारण मर रहे थे उन्हें तो जैसे राहत की सांस मिली है। जंगलों में खुशी की लहर दौड़ आई है। विभिन्न जीव-जंतु, पशु-पक्षी, जिनकी आवाज वाहनों के शोर में कहीं लुप्त हो गई थी, आज हम स्पष्ट सुन सकते हैं। सुबह का मनोहर दृश्य, नीला आकाश, चमकते तारे, चंद्रमा की सुंदर छटा जो केवल दूरदर्शी यंत्र से ही दिखाई देती थी, आज खुली आंखों से भी स्पष्ट दिखाई दे रही है। 'नमामि गंगे' व 'स्वच्छ भारत मिशन' को सफल बनाने में भी इस महामारी का बहुत बड़ा योगदान है।

समाज में फैली अनेक बुराइयां जैसे चोरी, स्नैचिंग, डकैती, रेप जैसी घटनाएं हम दिन-प्रतिदिन समाचार-पत्रों में देखते थे लेकिन "कोरोना" महामारी ने इन पर भी अपनी लगाम कसी है। इसके कारण सामाजिक

अपराधों को विराम मिला है। जो लोग व्यायाम व योग के लिए समय नहीं निकाल पाते थे उन्हें भी अच्छा अवसर मिल गया है। आज प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वो आफिस जाने वाले पुरूष हों या महिला, अपना काम स्वयं कर रहे हैं। कोरोना महामारी ने उन सभी लोगों को एक अवसर प्रदान किया है जो किसी न किसी कारण अपने कौशल को नहीं दिखा पाते थे, वे इसमें सफल भी हुए हैं जैसे मास्क बनाना, सेनिटाइजर बनाना।

मनुष्य का जीवन तनाव से भरा हुआ था। एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में रिश्तों में खिंचाव आने लगा था। कोरोना महामारी के कारण ही मानव जीवन तनावमुक्त हो पाया है। रिश्तों में फिर से प्यार का अहसास होना, एक-दूसरे से मिलने की ललक भी तो इसी महामारी के कारण संभव हो पाई है। लोगों में भाईचारे व सहनशीलता का आना, देश भक्ति व देश प्रेम की भावना का जागृत होना, सब इसी महामारी के कारण ही संभव हो पाया है।

समाज में सभी प्रकार के लोग रहते हैं, कुछ सकारात्मक तथ्यों को सोचते हैं, कुछ नकारात्मक तथ्यों को। ऐसा नहीं है कि कोरोना के नकारात्मक प्रभाव नहीं है, बिल्कुल हैं। कोरोना ने लघु उद्योग की तो कमर ही तोड़ दी। रोजाना कमाने-खाने वाले सभी वर्ग के लोग, जिनका जीवन प्रतिदिन की आय पर निर्भर था, उन पर महामारी के बहुत दुष्प्रभाव हुए हैं। ऐसा नहीं है कि सरकार इन लोगों का ध्यान नहीं रख रही है, बल्कि सरकार वे सभी प्रयत्न कर रही है जो इनके जीवन को सरल बना सकते हैं। निजी सैक्टर को भी इस महामारी ने बहुत नुकसान पहुंचाया है। ऐसे लोग जो असहाय हैं, अपना भोजन स्वयं नहीं बना सकते अर्थात दूसरों पर निर्भर हैं, उनको भी इसकी मार झेलनी पड़ रही है। बच्चों का बचपन जो उद्यान में फूलों की तरह खिल रहा था, घरों में रहने को विवश हैं।

"मानव है तो मानव जाति है,
और मानव जाति है तो देश,
देश को अवश्य बचाएंगे,
चाहे महामारी बदले कितने भी भेष।।"

भारत में गरीबों की स्थिति

शुभम वर्मा

भारत एक कृषि प्रधान देश है। आजादी के लगभग 73 वर्षों के बाद भी आज भारत की लगभग 70 प्रतिशत आबादी कृषि एवं उससे जुड़े उद्योगों पर आश्रित है। भारत एक विकासशील देश होने के साथ-साथ घनी आबादी वाला देश है, जिसके कारण भारत में गरीबों की संख्या बहुत अधिक है। भारत में गरीबी के प्रमुख कारणों में जनसंख्या, अशिक्षा, रोजगार के नए साधनों की कमी है। गरीबी एक ऐसी परिस्थिति है जिसमें लोग अपने जीवन की आधारभूत जरूरतों जैसे कि पर्याप्त भोजन, शिक्षा, कपड़े, आवास, स्वास्थ्य सुविधाएं आदि को भी नहीं प्राप्त कर पाते हैं। यह एक तरह से खराब अर्थव्यवस्था का परिणाम भी है। भारत में राष्ट्रीय आय में भिन्नता होना भी कहीं न कहीं गरीबी की ओर इशारा करती है। यह विशेष रूप से भारत जैसे विकासशील देश के लिए एक बड़ी चुनौती है जो साल-दर-साल विकराल रूप लेती जा रही है।

भारत में गरीबी रेखा को राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (एन.एस.एस.ओ.) द्वारा परिभाषित किया जाता है। हर पांच वर्ष में एन.एस.एस.ओ. एक बार गरीबी आंकने का विस्तृत सर्वेक्षण करता है। वर्ष 2011 में तेंदुलकर कमेटी ने गरीबी रेखा का निर्धारण किया था। इसके अनुसार यदि कोई व्यक्ति भोजन, कपड़ा, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधा के लिए सक्षम नहीं है तो वह व्यक्ति गरीब कहलाता है। भारत में गरीबी एक निरंतर रूप से विकराल होती जा रही समस्या के रूप में उभर कर आ रही है। छोटे बच्चों की कुपोषण से होने वाली मौत भी कहीं न कहीं गरीबी का ही परिणाम है। सामाजिक और राजनैतिक असमानता भी आर्थिक असमानता का कारण बनती है। जब किसी व्यक्ति, परिवार, समुदाय को व्यवस्था में उचित हिस्सेदारी नहीं मिलती तो वह धीरे-धीरे गरीबी की दिशा में अग्रसर होता रहता है। गरीबी के लिए जिम्मेदार कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैं:

1. तीव्रता से बढ़ती हुई जनसंख्या गरीबी का प्रमुख कारण हैं: पिछले कुछ दशक से जनसंख्या 2.2 प्रतिवर्ष की दर से बढ़ रही है। औसतन 16 से 17 मिलियन लोग भारत की जनसंक्ष्या में प्रतिवर्ष बढ़ जाते हैं।
2. कृषि या इससे संबंधित क्षेत्र में उत्पादन का कम होना, लगातार होता शहरीकरण, सड़कों का विस्तार कृषि योग्य भूमि को लगातार कम कर रहा है।
3. मानवीय साधनों के अल्प रोजगार और अदृश्य बेरोजगारी तथा साधनों के अल्प उपयोग की उपस्थिति कृषि क्षेत्र में कम उत्पादन का कारण बनी हुई है जिसके कारण लोगों का जीवन स्तर नीचे आया है।
4. कीमतों में वृद्धि भी इसका प्रमुख कारण है। पेट्रोल, डीजल इत्यादि की जब कीमतें बढ़ती हैं तो इसका सीधा प्रभाव खाद्य पदार्थों, उपभोक्ता वस्तुओं पर पड़ता है जो आम लोगों की मुसीबत और भी बढ़ा देता है। कीमतें बढ़ने से समाज के चंद लोगों को फायदा होता है तथा इसका नुकसान बड़ी आबादी को होता है।
5. सामाजिक व्यवस्था भी पिछड़ी हुई है तथा तीव्र विकास में सहायक नहीं है जिससे निर्धनता की समस्या और भी तीव्र हो गई है।
6. बेरोजगार लोगों की निरंतर बढ़ती हुई संख्या निर्धनता का एक अन्य प्रमुख कारण है। काम खोजने वाले लोगों की संख्या रोजगार के अवसरों के विस्तार की दर के अनुपात में बहुत बड़ी है।
7. कुछ लोग अपने हितों के लिए प्राकृतिक साधनों का शोषण कर रहे हैं और भारतीय अर्थव्यवस्था के औद्योगिक आधार को दुर्बल बना रहे हैं।
8. स्वतंत्र भारत में विकास योजनाएं राजनैतिक स्वार्थ से प्रेरित हैं। भारत में गरीबी दूर करने के या रोजगार के नए-नए अवसर पैदा करने के साधनों का कोई ठोस उपाय नहीं है और न ही इस ओर कोई ठोस पहल की जा रही है।

गरीबी से लोगों का जीवन स्तर कुछ इस तरह प्रभावित

होता है - गरीबी के कारण अशिक्षा, असुरक्षित आहार और कुपोषण, बालश्रम, घर का न होना, गुणवत्ताहीन जीवन शैली, बेरोजगारी, साफ-सफाई का अभाव इत्यादि लोगों के जीवन स्तर पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। धन की कमी के कारण गरीब और अमीर के बीच की खाई दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। गरीबी की वजह से ही बच्चे बचपन से ही स्कूल जाने के बजाय मजदूरी करने को विवश होते हैं। गरीबी के कारण ही लोगों को पर्याप्त तथा उचित शिक्षा न मिलने के कारण बच्चों का मानसिक विकास उच्च स्तर तक नहीं हो पा रहा है। गरीबी के कारण लोगों को दो वक्त का खाना भी नहीं मिल पा रहा है। लोग अपने तथा अपने परिवार का पूरी तरह इलाज भी नहीं करा पाते हैं और औसत जीवन प्रत्याशा कम बनी हुई है। गरीब लोग रोजगार, वित्तीय गतिविधियों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं जिससे शहरों पर लगातार दबाव बनता जा रहा है। गरीबी के कारण गरीब लोग, किसान वर्ष दर वर्ष बैंक ऋण के नीचे दबते जा रहे हैं तथा कभी-कभी ऐसी स्थिति आ जाती है कि उन्हें आत्महत्या जैसा कदम उठाना होता है इसी कारण शहरों की मलिन बस्तियों में रहने वालों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

गरीबी को समाप्त करने के लिए कुछ निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

1. सबसे पहले बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकना बहुत आवश्यक है। सरकार को चाहिए कि इसके लिए एक ठोस जनसंख्या कानून लाया जाए तथा देश की जनता को भी इसके प्रति जागरूक किया जाए।
2. लघु और कुटीर उद्योग, टैक्सटाइल उद्योग, कपड़े तथा चमड़ा से संबंधित उद्योगों को तथा हस्तशिल्प को बढ़ावा देकर रोजगार को बढ़ाया जा सकता है। लघु और कुटीर उद्योग लगने से लोगों का शहरों की ओर पलायन भी रूकेगा और शहरों पर दबाव कम होगा। इसके अलावा प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के उचित क्रियान्वयन से भी रोजगार को बढ़ावा दिया जा सकता है।
3. मनरेगा योजना के उचित प्रयोग से संसाधनों का विकास कर गरीबी को कम किया जा सकता है। इन तथ्यों के अलावा गरीबी निवारण के लिए सामाजिक तथा आर्थिक अवसंरचना का विकास भी आवश्यक है।
4. भारत में गरीबी का सर्वाधिक संकेषण ग्रामीण क्षेत्रों में कृषकों तथा शहरों में मजदूरों में है। अत: गरीबी निवारण जैसे कार्यक्रमों में इन्हें केंद्र बिंदु बनाए जाने की आवश्यकता है।
5. कृषि तथा संबंधित उद्योगों पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। कृषि के उत्पादन में आधुनिक बीजों, दवाओं, खादों का उपयोग किया जाना चाहिए। सरकार को चाहिए कि कृषि या इससे संबंधित चीजें जैसे कृषि यंत्र, ट्रैक्टर, खाद, बीज इत्यादि पर जी.एस.टी. को समाप्त करे या कम से कम जी.एस.टी. या टैक्स हो जिससे कृषि तथा किसान दोनों को लाभ होगा।
6. किसानों को अपने खेत में पैदा किए अन्न को देश के किसी भी कोने में बेचने की आजादी होनी चाहिए तथा किसानों और सरकार के बीच में बिचौलियों की भूमिका नहीं होनी चाहिए।
7. देश में बड़े-बड़े उद्योग धंधे लगाए जाने चाहिए तथा वर्ल्डक्लास इंफ्रास्ट्रक्चर के तौर पर इन्हें विकसित करना चाहिए।
8. लोगों को भी अपने और अपने समाज के लिए नए-नए अवसर खोजने चाहिए। जितना जरूरी हो उतना ही प्रकृति को दोहन करे ताकि आने वाली पीढ़ी को भी प्रकृति से लोहा, कोयला इत्यादि चीजें मिल सके।

निष्कर्ष रूप में इतना ही कहा जा सकता है गरीबी केवल एक इंसान या समुदाय की समस्या नहीं है यह पूरे देश की राष्ट्रीय समस्या है इसे त्वरित आधार पर प्रभावी उपायों से सुलझाना चाहिए। सरकार द्वारा निर्धनता को दूर करने के विभिन्न प्रकार के कदम उठाए गए हैं, हालांकि कोई भी स्पष्ट परिणाम दिखाई नहीं देता है। इससे निपटने की रणनीति बनाते हुए समाज का विकास सुनिश्चित करना होगा क्योंकि गरीबी का उन्मूलन केवल समग्र विकास से ही संभव है। गरीबी को जड़ से उखाड़ने के लिए हरेक व्यक्ति का एकजुट होना बहुत आवश्यक है।

कोरोना वायरस, सावधानी ही बचाव है

राकेश रंजन मिश्रा

'रोटी की तलाश में मजदूर हो गए,
तकदीर ने मारा ऐसा कि मजबूर हो गए।
ख्याति मिली ऐसी जो किसी काम की नहीं,
वक्त के मारे फ़कीर हो गए।'

वर्ष 1918-20 के बीच स्पैनिश फ्लू नाम की बीमारी वैश्विक तबाही मचाने आयी थी। स्पैनिश फ्लू ने चारों तरफ कोहराम मचा रखा था। ऐसा माना जाता है कि उस वक्त उक्त महामारी के प्रकोप से करोड़ों जानें गईं थी। उस दौर में भी पता लगाना मुश्किल था कि स्पैनिश फ्लू की उत्पत्ति कहां से हुई और आज जब लोग कोरोना वायरस के प्रकोप से पीड़ित हैं, तब भी इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि कोरोना वायरस कहां से उत्पन्न हुआ?

त्योहारों का मौसम था। कहीं होली तो कहीं ईद की तैयारी चल रही थी। इसी बीच गुड फ्राइडे और अन्य त्योहारों का भी आगमन होने ही वाला था। सभी के दिलों में साल भर के सजोए सपनों की प्रतीक्षा खत्म होने वाली थी। अचानक कोरोना महामारी के दस्तक देने के साथ ही सपने चूर-चूर हो गए, खुशियां मातम में बदलने लगीं और मजदूर सड़क पर नजर आने लगे। सबके दिलों में बस एक ही चाहत थी- अपने-अपने घरों को लौटना। कई परिवारों के हाल तो ऐसे थे कि न उनका चूल्हा बचा न चौका! प्रवासी मजदूर इतने लाचार होते जा रहे थे कि अपने कठिन परिश्रम द्वारा वर्षों से बनाई जमीं का मोह भी उन्हें रोक नहीं पा रहा था। उनका रोज का कमाना-खाना बंद हो चुका था। मानो उनसे कह रहा हो- चलो मुसाफिर, सफर खत्म हुआ। केंद्र सरकार और राज्य सरकारें अपने-अपने हिसाब से उन्हें राहत देने की तैयारी में लग गई थी, पर शायद उन लाचार मजदूरों के भरोसों को जीतने के लिए कम थे।

मार्च का महीना था। स्कूलों में वार्षिक परीक्षाएं चल रहीं थी। दफ्तरों-बैंकों में क्लोजिंग की तैयारी चल रही थी। अचानक कोरोना वायरस का कहर शुरू हो गया। प्रतिदिन इसके आंकड़े बढ़ रहे थे। उधर शासन ने भी सतर्कता बरतनी शुरू कर दी थी। पहले तो लोगों ने भी कोरोना वायरस को हल्के में लिया और यही सोचा कि कोई साधारण सी बीमारी है, जो वायरल हो रही है लेकिन जब मौत के आंकड़े बढ़ने लगे, तब सबकी समझ में आ गया कि यह कोई साधारण बीमारी नहीं है। जैसे-जैसे समय बीत रहा था शासन के लिए चुनौतियां बढ़ रहीं थीं। परिणामस्वरूप सख्ती शुरू हो गई और लोगों का घर से बाहर निकलना भी बंद कर दिया गया। चेहरे पर मास्क और सैनिटाइजर के इस्तेमाल की हिदायतें गूंजने लगीं। पार्क के सैर-सपाटे बंद कर दिए गए। प्रधानमंत्री जी ने जनता को स्वयं संबोधित किया और इस संबोधन के दौरान ही एक दिन के लिए जनता कर्फ्यू का ऐलान किया। रविवार का दिन था इसलिए जनता की पूरी सहमति के साथ लागू किया गया कर्फ्यू सफल हुआ। लेकिन कोरोना वायरस का प्रकोप इससे नियंत्रित होने वाला नहीं था। इसका संक्रमण बहुत तेजी से फैल रहा था। एक-दूसरे के संपर्क को तोड़ने के लिए अभी और सख्त निर्णय लिए जाने बाकी थे। जब तक पूरी दुनिया इसको समझती और संभलती, तब तक तो कोरोना वायरस महामारी का रूप ले चुका था। इसके आंकड़े एक लाख पार कर चुके थे। हालांकि शुरूआत में इसके संक्रमण को रोकने के लिए एक-दो दिन की सख्ती काफी लग रही थी पर इसकी गति को देख कर अंततः शासन ने 21 दिनों के लिए संपूर्ण लॉकडाउन का ऐलान कर दिया। आखिरकार, कोरोना संक्रमण की रोकथाम के लिए सबसे अहम सोशल डिस्टेंसिंग हेतु देशव्यापी लॉकडाउन लागू हुआ। अब तक सिर्फ और सिर्फ कोरोना वायरस की चर्चा थी, पर लॉकडाउन ने 'बेकारी' और 'भुखमरी' का दूसरा वार

शुरू कर दिया। मीडिया में भी इसके चर्चे होने लगे। मजदूरों की तरह-तरह की तस्वीरें सामने आने लगीं। रोज कमाने-खाने वाले दूसरे राज्यों में रह रहे लोगों के लिए यह बहुत बड़ी समस्या थी इसलिए उनका ठहर पाना मुश्किल होने लगा। वे अपने-अपने घरों के लिए पैदल ही निकल पड़े थे। उनमें से कितनों ने तो रास्ते में ही दम तोड़ दिया। लॉकडाउन बढ़ता गया और लोगों की परेशानियां भी।

कोरोना वायरस पिछले सौ साल में जीवन के हर क्षेत्र में सबसे ज्यादा अनिश्चितता लेकर आया, इसमें कोई दो राय नहीं है। 1943-44 में अकाल ने बिहार, बंगाल और उड़ीसा के किसानों की कमर तोड़ दी थी। पहले भी महामारी या प्राकृतिक आपदाओं ने तबाही मचाई, पर कोरोना वायरस जैसी वैश्विक महामारी ने चारों तरफ भय और स्वयं पर शंका करने का सिलसिला शुरू किया। एक तरफ कोरोना संक्रमितों का ग्राफ रूकने का नाम नहीं लेता तो दूसरी तरफ बाजार का सूनापन आर्थिक संतुलन के बिगड़ने का संकेत दे रहा है। कोरोना वायरस के प्रकोप को कम करने के लिए शासन द्वारा लगाए गए लॉकडाउन से इकोनॉमी की रफ्तार ठप्प हो गई जो आने वाले दिनों में भी आर्थिक संकट और चुनौतियों का सूचक है। हालांकि कोविड-19 महामारी पर शुरू से ही भारत ने मजबूत पकड़ बना ली जिससे बाकी देशों के अनुपात में यहां के सक्रिय मामलों पर काबू पाया जा सका।

एक प्रकार देखें तो कोरोना वायरस ग्लोबल इकोनॉमी से लेकर सामाजिक अस्तित्व को बचाए रखने के लिए सबसे बड़ी अग्निपरीक्षा है। अभी तक कोरोना वैक्सीन विकसित नहीं हुआ है इसलिए रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता तथा व्यक्तिगत सावधानी से ही संक्रमण से बचा जा सकता है। चुनौतियों के बीच भविष्य को संवारने की बजाय बचाने की चुनौती है क्योंकि इस संक्रामक रोग को हल्के में नहीं लिया जा सकता। 10 जुलाई 2020 तक इसके प्रकोप से केवल अमेरिका में एक लाख 35 हजार लोगों ने दम तोड़ दिया जबकि लगभग 32 लाख लोग संक्रमित हुए। भारत में कुल संक्रमितों की संख्या आठ लाख के पार है जिसमें से साढ़े पांच लाख लोग स्वस्थ हो चुके हैं और 23 हजार लोगों ने दम तोड़ा है। कोरोना वायरस से पीड़ित लोगों की स्वस्थ होने की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। इस रोग से बचाव के लिए वैक्सिन भी खोजा जा चुका है। आशा है कि ये वैक्सिन जल्द से जल्द आम जनता तक पहुंच सके तथा इस महामारी से छुटकारा पाकर वे पहले की तरह खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकें।

इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।

मादक पदार्थों का बढ़ता सेवनः एक गंभीर चिंता का विषय

डॉ. लाखा राम

आज भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व में मादक पदार्थों का बढ़ता सेवन गंभीर चिंता का विषय बन चुका है। कोई भी रसायन जो किसी व्यक्ति की शारीरिक या मानसिक कार्यप्रणाली में बदलाव लाए, अर्थात् नींद, नशे या विभ्रम की हालत में शरीर को ले जाए, वह ड्रग्स या मादक पदार्थ कहलाता है। इनका नशा एक अभिशाप है। यह एक ऐसी बुराई है जिससे इंसान का अनमोल जीवन मौत के आगोश में चला जाता है एवं उनका परिवार बिखर जाता है। भारत में मादक द्रव्यों के सेवन का प्रचलन हमेशा से ही रहा है। प्राचीन समय से लोग सामाजिक स्वीकृति से मादक द्रव्यों का सेवन करते आ रहे हैं। अथर्ववेद में भांग के प्रयोग का उल्लेख मिलता है। पुराणों में भांग के लिए 'विजया' शब्द का प्रयोग हुआ है। आर्य लोग 'सोमरस' का पान करते थे। ज्ञातव्य है कि 8वीं-9वीं शताब्दी में मादक पदार्थों का सेवन फैशन के रूप में किया जाता था। मुगल काल और उसके बाद सोलहवीं शताब्दी तक धनी व्यक्ति ऐशो-आराम के लिए शराब और अन्य नशीली वस्तुओं का प्रयोग करते थे। भारत ही नहीं वरन् संसार के सभी देशों में मादक पदार्थों/नशीली वस्तुओं पर लाखों-करोड़ों रूपये खर्च होते हैं। प्रायः यह देखने में आया है कि सामाजिक एवं धार्मिक आयोजनों, क्रीड़ात्मक उत्सवों, त्योहारों, अतिथि सत्कार, विदाई समारोहों, सगाई व विवाह अवसरों पर, नव-वर्ष मनाने, सम्पत्ति मिलने, रोजगार मिलने, पदोन्नति होने पर, परीक्षा में असफल होने, असफल प्रेम संबंध और हीन भावना, पारिवारिक स्नेह का अभाव, बोरियत, थकान, मायूसी से मुक्ति, व्यक्तिगत निराशा, संबंधों में बिखराव एवं महज मौज-मस्ती आदि जैसे अवसरों पर मादक पदार्थों का सेवन खूब किया जाता है। नशे के लिए केवल शराब ही नहीं, वरन् अन्य कई वस्तुओं जैसे-बीड़ी, सिग्रेट, तम्बाकू, खैनी, गुटका, सुल्फा, हेरोइन, भांग, गांजा, अफीम, चरस, मारिजुआना, कोकीन, माजूम, मारफीन, पैथेडीन, ब्राउन शूगर तथा एस्पिरीन आदि का भी सेवन किया जा रहा है। कई लोग शराब आदि का प्रयोग विशेष अवसरों पर शौक के रूप में करते हैं, परन्तु मादक द्रव्यों का सेवन जब आदत का रूप ले लेता है तो चिंता का विषय बन जाता है।

निस्संदेह मादक पदार्थों का सेवन एक वैश्विक चुनौती है। ये पदार्थ किसी भी आयु वर्ग के व्यक्ति को अपनी गिरफ्त में ले सकते हैं। विशेषकर युवा, किशोर और कम उम्र के युवाओं के मादक पदार्थ के गिरफ्त में आने की संभावना अधिक रहती है। इन पदार्थों के सेवन से तन, मन और धन सभी की हानि होती है। दक्षिणी अमेरिका में श्रमिकों में कोकीन के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाता रहा है जिससे उनसे अधिकाधिक काम लिया जा सके। वर्तमान में भारत के बीस प्रतिशत राज्य नशे की गिरफ्त में हैं। इसने मुख्यत: पंजाब, गोवा, मणिपुर, तमिलनाडु, सिक्किम और नागालैंड में भयावह आयाम ग्रहण कर लिए हैं। नशे का आदी युवा अपराध की अंधेरी गलियों में कदम रखने लगता है, जिसके चलते समाज में आपराधिक घटनाएं बढ़ने लगती हैं। मादक पदार्थों के निरंतर प्रयोग से शरीर उन पदार्थों की उपस्थिति से अपना सामंजस्य कर लेता है और यदि किसी कारणवश इनका प्रयोग नहीं किया जाता है तो शरीर में दर्द, बेचैनी और रूग्णता महसूस होती है। यदि मादक पदार्थों का सेवन बन्द कर दिया जाता है तो शरीर के संचालन व संतुलन में बाधा उत्पन्न होती है। मादक द्रव्य इतने उत्तेजक होते हैं कि सेवन करने वाले को तत्काल ही अपने आसपास की दुनिया से काट देते हैं और उसे विक्षिप्त कर देते हैं। क्षणिक सुख या खुशी के चक्कर में पूरे जीवन को विनाशकारी बनाना सर्वथा अनुचित है।

ऐसा नहीं है कि इन मादक पदार्थों के सेवन से किशोर वर्ग बच नहीं सकता है, लेकिन इसका सीधा व सरल उपाय है कि उन्हें स्वयं इन आदतों में पड़ने से बचना चाहिए। प्रायः देखने में आता है कि अधिकांश किशोर कुसंगति में पड़कर ही इन मादक पदार्थों का सेवन करते हैं। जिसके लिए किशोरों को आत्म नियन्त्रण रखना चाहिए और सही मित्रों व अपने-पराये का चुनाव स्वयं ही करना चाहिए, क्योंकि मादक पदार्थों के प्रति रूचि पैदा करने वाले भी अधिकांश किशोर मित्र ही होते हैं। यदि किशोरों को अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना हो तो वे माता-पिता या शिक्षकों का पूरा सहयोग लें। आज भाग दौड़ के युग में हमारा समाज बहुत व्यस्तता के कारण एक अजनबी भरे दौर से गुजर रहा है। माता-पिता अपने-अपने व्यवसाय में इतने व्यस्त हैं कि जो समय उन्हें अपने बच्चों को देना चाहिए वह नहीं दे पा रहे हैं। इससे हमारी नौजवान पीढ़ी मानसिक तनाव एवं सही मार्गदर्शन के अभाव में मुख्य लक्ष्य से भटक रही है और क्षणिक आनन्द प्राप्ति के लिए मादक पदार्थों की तरफ आकर्षित हो रही है। देश के विभिन्न प्रतिष्ठित कॉलेजों में भी नशीले पदार्थ आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। यह एक सामाजिक विडम्बना है।

आज हमारे अध्यापकों, माता-पिता एवं समाज के बुद्धिजीवियों का नैतिक कर्तव्य बनता है कि किशोरों को इनके दुष्परिणामों से अवगत करवाते हुए लक्ष्य प्राप्ति में उनका मार्गदर्शन करें और उन्हें सभ्य, सुसंस्कृत, ईमानदार एवं कर्तव्यपरायण नागरिक बनाएं। युवा वर्ग को अपने खाली समय का सदुपयोग सृजनात्मक व रचनात्मक कार्य करने में करना चाहिए ताकि अपने अन्दर छिपी कला में निखार ला सकें और समाज के अच्छे नागरिक बन सकें। शराब पीकर गाड़ी चलाते हुए एक्सीडेंट करना, शादीशुदा व्यक्तियों द्वारा नशे में पत्नी तथा घर परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अक्सर मारपीट करना एक आम बात है। विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों का सेवन मुंह, गले व फेफड़ों का कैंसर, ब्लड प्रैशर, अल्सर, यकृत रोग, अवसाद एवं अन्य अनेक रोगों का मुख्य कारण है। सामाजिक दृष्टि से जुआ, वेश्यावृति, आतंकवाद, डकैती, मारपीट, दंगे, अनुशासनहीनता जैसी सामाजिक समस्याएं व्यसन से ही संबंधित हैं। मादक द्रव्यों का सेवन एचआईवी, हेपेटाइसिस, तपेदिक जैसे गंभीर रोगों का भी कारण है। इसके अलावा आर्थिक हानि और असामाजिक व्यवहार जैसे चोरी, हिंसा, हत्या, आत्महत्या, अपहरण, बलात्कार, तस्करी, आदि अपराधों में वृद्धि होती है, सामाजिक एवं नैतिक मूल्य कमजोर पड़ जाते हैं, सामाजिक परम्पराएं एवं मर्यादाएं टूटने लगती हैं। इससे युवा वर्ग के चरित्र का पतन होने लगता है, भ्रष्टाचार पनपता है, कानून की अवहेलना बढ़ती है और सामाजिक-आर्थिक समस्याएं पैदा होती हैं जो व्यवस्थित सामाजिक जीवन को नष्ट कर देती है।

याद रखें नशा एक जहर हैं। मानव जीवन अनमोल है। अतः इसकी रक्षा करना हम सबका धार्मिक, सामाजिक एवं नैतिक कर्तव्य है। नशे से लड़ने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सामूहिक संकल्प की आवश्यकता है, केवल सरकार या नशा मुक्ति संस्थाओं के कंधे पर सारी जिम्मेदारी डालना कदापि न्यायोचित नहीं है। जहाँ तक हो सके, युवाओं को स्वयं इन आदतों से दूर रहना चाहिए क्योंकि, वे देश का भविष्य हैं।

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

नरेंद्र मोदी (प्रधान मंत्री)

डायबिटीज की समस्या और उपचार

धर्मवीर सिंह

वर्तमान परिवेश में डायबिटीज एक बहुत बड़ी समस्या बन गई है। एलोपैथी, होमियोपैथी या आयुर्वेद में इसका जो इलाज अब तक है उसके अनुसार रोगी को जीवन भर के लिए दवा पर निर्भर रहना पड़ता है लेकिन उपचार के दृष्टिकोण से जब हम योग की शरण में जाते हैं तो हमें इसका पूर्ण लाभ मिलता है। योग से इस रोग पर काबू पाया जा सकता है। आमतौर पर इस बीमारी को लोग 'शुगर' के नाम से जानते हैं। इसका उम्र से कोई संबंध नहीं है क्योंकि बड़ी संख्या में बच्चे भी इस रोग का शिकार हो रहे हैं इसलिए सभी लोगों को अपनी दैनिक जीवनशैली बेहतर बनानी चाहिए और सचेत रहना चाहिए। अगर संक्षेप में इस बीमारी को समझना चाहें तो यही समझना है कि हमारे शरीर के पैंक्रियाज में जब इंसुलिन बनना कम हो जाती है तो रक्त में ग्लूकोज का लेवल बढ़ जाता है। इंसुलिन एक प्रकार का हार्मोन है जिसका काम भोजन से बनने वाली कैलोरी को बर्न करना है। इससे हमारे शरीर में ग्लूकोज की मात्रा नियंत्रित रहती है परंतु जब ग्लूकोज की मात्रा बढ़ती है तो हमारे शरीर पर इसका बुरा प्रभाव पड़ने लगता है।

डायबिटीज की समस्या वंशानुगत भी होती है और हमारी दैनिक जीवनशैली पर भी निर्भर करती है। अनियमित खान-पान के अलावा मोटापा, कम शारीरिक परिश्रम, कम निद्रा जैसी आदतें हमारी जीवनशैली को प्रभावित करती है। मानसिक तनाव या डिप्रेशन के कारण भी हमारा स्वास्थ्य प्रभावित होता है। इसका सीधा असर हमारी आंखों और हृदय पर पड़ता है। इसलिए शारीरिक विकास के लिए या स्वस्थ जीवन के लिए संतुलित जीवनशैली का होना बहुत जरूरी है अन्यथा निरोग रहना कठिन है। वैसे भी यदि घर में पहले से ही 'शुगर' का कोई रोगी हो तो बाद की पीढ़ी में भी इसके होने की संभावना काफी बढ़ जाती है। भारत जैसे विशाल आबादी वाले देश में इसकी संख्या करोड़ों में है। मोटे तौर पर कहें तो कोई भी प्रक्रिया जो पैंक्रियाज को प्रभावित करे, डायबिटीज का कारण हो सकती है।

इस बीमारी को दो वर्गों में रखा गया है एक है शरीर में इंसुलिन का नहीं बनना (टाईप-1) और दूसरा इंसुलिन का कम मात्रा में बनना (टाईप-2) जिसकी संख्या सबसे अधिक है। यह रोग हृदय गति और किडनी को भी बहुत नुकसान पहुंचाता है। किसी व्यक्ति का एक प्रकार की मधुमेह की पहचान अकसर डायग्नोसिस के समय मौजूद परिस्थितियों पर निर्भर करती है क्योंकि जरूरी नहीं कि वे एक ही श्रेणी में स्पष्ट रूप से फिट बैठते हों। उदाहरण के लिए कुछ रोगियों को टाईप-1 या टाईप-2 मधुमेह होने के रूप में स्पष्ट रूप से वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है। यह रोग शरीर को कमजोर बना देता है। चोट या जख्म का जल्दी न भरना, बार-बार पेशाब आना, आंखों की रोशनी कम होना, ज्यादा भूख-प्यास लगना आदि इसके प्रमुख लक्षण हैं। मधुमेह के रोगियों के लिए गाजर, पालक, पत्तेदार सब्जियां, लौकी, पपीता, शलगम बहुत फायदेमंद होते हैं। जामुन तो इसके लिए रामबाण है। जामुन की गुठली का चूर्ण या मेथी के दानों का चूर्ण भी बहुत लाभकारी होते हैं। इन सब के अलावा इस रोग के लिए सबसे फायदेमंद है 'योग'। डायबिटीज के रोगी को सुबह-शाम नियमित रूप से योग करना चाहिए अनुलोम-विलोम, प्राणायाम, कपालभाति आदि करने से बहुत लाभ मिलता है। पेट के लिए मंडूक आसन फायदेमंद होता है।

मधुमेह शरीर के कई अंगों के लिए हानिकारक है। अत: इससे बचाव के लिए खान-पान की संयमित आदतों के अलावा योग, सैर और कसरत आवश्यक है।

शर्त

प्रवीन कुमार अरोड़ा

तीन दोस्त पंकज, मंजोत व साहिल पिक्चर देखने थियेटर जाते हैं, टिकट लेकर अन्दर बैठ जाते हैं। थोड़ी देर में पिक्चर शुरू हो जाती है। उनके सामने वाली लाईन में ठीक साहिल के सामने एक मोटा तगड़ा गंजा व्यक्ति बैठा होता है। उस मोटे तगड़े गंजे को देखकर पंकज साहिल से कहता है -

पंकज: साहिल यार अगर तू सामने बैठे टकले के सिर पर चपेड़ (थप्पड़) मारकर दिखाए तो मैं तुम्हें 500 रूपये दूंगा।

साहिल: देख ले यार कहीं तुझे 500 रूपये की चपत न लग जाये।

पंकज: कोई फिक्र नहीं यार।

साहिल: तो ठीक है फिर, अब देखो साहिल का कमाल। ऐसा कह साहिल ने गंजे के सिर पर एक चपेड़ मारकर कहा 'अनुपम क्या हाल है भाईं'।

गंजा: अरै मैं अनुपम कोना! (गंजा व्यक्ति गुर्राता है)।

साहिल: सॉरी भाई साहब, वेरी सॉरी।

पिक्चर चल रही है। साहिल पंकज से 500 रूपये ले लेता है। थोड़ी देर के बाद शरारत का कीड़ा मंजोत के दिमाग़ में कुलबुलाने लगता है और वह साहिल से कहता है -

मंजोत: साहिल अगर तू फिर इस टकले को चपेड़ लगाकर दिखाए तो मैं भी तुझे 500 रूपये दूंगा।

साहिल: अबे तुम दोनों ने क्या सारी पॉकेट मनी मुझे ही देनी है।

मंजोत: ज्यादा उड़ने की जरूरत नहीं है, अगर है हिम्मत तो लगा चपेड़ और ले ले 500 रूपये।

साहिल: चल बेटा कर ले फिर 500 रूपये तैयार।

और ऐसा कहकर वह अपने कालर को उठाकर गिराता है और गंजे के सिर पर चपेड़ लगाकर कहता है - 'अबे अनुपम ये तू ही तो है यार।'

गंजा: अरै मैं अनुपम कोनी ताउ मेरे। पिक्चर देखण दे मनै चैन तै। (ओ मेरे अंकल मैं अनुपम नहीं हूं, मुझे ज़रा चैन से पिक्चर देखने दो)।

साहिल: भूल हो गई भाई साहब। कान पकड़ के सॉरी।

अब फिर सभी पिक्चर देखने लग जाते हैं, साहिल मंजोत की तरफ हथेली खोल बंदकर पांच सौ रूपये देने का इशारा करता है और मंजोत मायूस सा चेहरा लिए उसे 500 रूपये पकड़ा देता है। थोड़ी देर के बाद मध्यांतर हो जाता है। सभी थियेटर से बाहर आते हैं और पापॅकार्न एवं कोका-कोला लेकर खा-पी रहे होते हैं, तभी उनकी नज़र कुछ दूरी पर खड़े उसी गंजे की तरफ जाती है जो कि समोसा खा रहा होता है और अपनी उंगलियों से चटनी को चाट रहा होता है। ये देखते ही दोनों दोस्तों के दिमाग में साहिल को पिटवाने का विचार जन्म लेता है और वे एक सुर में बोलते हैं -

पंकज व मंजोत: तो हो जाए एक शर्त और। अगर ये कारनामा फिर से करके दिखाए तो हम दोनों की तरफ से 500-500 रूपये।

साहिल: अबे तुम दोस्त हो या दुश्मन।

पंकज व मंजोत दोनों उसे 500-500 रूपये एक साथ दिखाते हैं।

साहिल: नोट देखकर लालच से जीभ फिराता है और कहता है।

चलो ठीक है 1000 रूपये के लिए तो मैं मार भी खा लूंगा।

और ऐसा कहकर वह गंजे के पीछे जाता है और उसे एक चपेड़ मारकर कहता है -

'अनुपम तू यहां है और अन्दर बेचारा एक शरीफ आदमी बेवजह मेरी वजह से परेशान हुआ'

गंजा, जिसकी पहले साहिल की तरफ कमर थी अचानक घूमता है उसके नथुने फूले होते हैं, चेहरा गुस्से से

तमतमाया होता है। उधर साहिल थूक गटकता है। चेहरे पर भय के चिहऩ हैं वह अपने दोनों हाथों से अपने कान पकड़ता है और कहता है -

साहिल: माफ कर दो सर। इन्सान तो गलती का पुतला है और ग़लती तो किसी से भी हो सकती है, वो देखो मेरे दोस्त खड़े हैं, उनसे पूछ लो आपकी शक्ल मेरे दोस्त अनुपम से कितनी मिलती है।

गंजा: गुस्से से उठाए अपने हाथ नीचे करके पैर पटकता हुआ वापस थियेटर चला जाता है। अन्दर जाकर अपनी सीट पर पहुंच कर बोलता है

इब आड़ै कोनी बैठूं, सारा मज़ा किरकिरा कर दिया फिल्म का इन छोरां नै। (अब यहां नहीं बैठूंगा, इन लड़कों ने पिक्चर का सारा मज़ा ही खराब कर दिया है।)

ऐसा कहकर वह दूसरे कोने में जा बैठता है। इंटरवल के बाद पिक्चर दोबारा शुरू होती है। उधर मंजोत व पंकज का ध्यान पिक्चर की तरफ बिल्कुल भी नहीं है वे तो बस सोच रहे थे कि इस साहिल के बच्चे से कैसे बदला लें जो उनके इतने रूपये आज शर्त में जीत गया था और अब मजे से पिक्चर देख रहा था, वे दोनों आपस में खुसरपुसर कर एक और शर्त लगाने का प्रोग्राम बनाते हैं और साहिल से कहते हैं -

मंजोत: अबे साहिल, अगर सही में तुम्हारे अंदर हिम्मत है तो एक शर्त और लगा। वही शर्त, वही टकलू पर शर्त होगी 2000 की। जीत गया तो 2000 तेरे और अगर हार गया तो हमसे जीते सारे रूपये लौटा देना।

साहिल: लगता है तुम दोनों आज मुझे पिटवा के ही छोड़ोगे।

दोनों 1000-1000 रूपये उसकी गोद में रख देते हैं।

पंकज: ले रख एडवांस, अगर जीत गया तो सारे तेरे और हार गया तो तेरी जेब से तो एक रूपया भी नहीं जाएगा।

साहिल: कुछ सोचकर उसकी आंखों में एक चमक आती है। वह पिक्चर खत्म होने का इन्तजार करता है और खत्म होने से चन्द ही पल पहले वह उठकर दूसरे कोने में गंजे की सीट के पीछे पहुँच कर उसे चपेड़ लगाकर कहता है -

'अबे अनुपम के बच्चे तू इस कोने में छुपा बैठा है आज तो मरवा ही दिया था तूने।'

अब गंजे की हालत देखने वाली थी क्रोध से उसका चेहरा तमतमा रहा था, भृकुटियाँ तन गई थी, सहसा उसके मुँह से जैसे एक फुंफकार सी निकली -

गंजा: ससुरी के नूं कोनी मानैगा तैं। ठहर जा, इब बताउंगा मैं तनै।

इतने में पिक्चर खत्म हुई और साहिल भीड में गुम हो गया। फिर गंजे की नज़र उसके दोस्तों की तरफ गई और अब वह उनकी तरफ दौड़ा, जल्दी से उन तक पहुँचकर उनको दो-दो हाथ लगाए ही थे कि वह भी साहिल को कोसते सिर पर पैर रखकर सरपट दौड़े। अब मंजोत व पंकज आगे आगे और गंजा उनके पीछे-पीछे। चलती लोकल बस में चढ़कर दोनों ने अपनी जान बचाई। जैसे ही बस के अन्दर सीढी से ऊपर पाँव रखा तो साथ ही ऊपर सीट पर बैठे साहिल की हंसी की आवाज सुनाई दी। आओ यारो, तुम दोनों की बस की टिकट मेरी तरफ से। लुटे-पिटे दोनों दोस्त साहिल की ओर खा जाने वाली नज़रों से देखने लगे और शर्त को याद कर अपनी किस्मत को कोसने लगे।

भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

अमित शाह (गृह मंत्री)

विद्या कर्म - श्रेष्ठकर्म

रमेश कुमार

पौराणिक काल से ही गुरु फल की चिंता किये बिना ज्ञान के प्रसार के साथ-साथ समाज के विकास के लिए तत्पर रहे हैं। गुरु के मन में सदैव ही यह विचार होता है कि उसका शिष्य सर्वश्रेष्ठ हो तथा उसके गुणों की चर्चा समाज में हो। वह जीवनभर अच्छा काम करे तथा असहाय लोगों की बिना किसी भेदभाव के सहायता करे और समाज में अपने गुरु का नाम रोशन करे। इस संबंध में एक कहानी बताना चाहता हूं।

पुराने ज़माने में तीन दोस्त - तहसीलदार, थानेदार एवं गुरु थे। एक बार तीनों दोस्तों ने हरिद्वार जाने का निश्चय किया। सब मिलकर वहां पर सर्दी के मौसम में आने वाली परेशानी के बारे में विचार करने लगे। तहसीलदार ने बताया कि वहां पर कोई परेशानी नहीं होगी क्योंकि कई वर्ष पहले वे हरिद्वार में तैनात थे। उन्होंने कई लोगों को अनधिकृत रूप से होटल खोलने की इजाजत दी थी। अत: वहां पर रहने में कोई परेशानी नहीं आएगी। थानेदार ने भी बताया कि उनकी भी हरिद्वार में तैनाती रही है, जिसके कारण बहुत से अपराधी उनकी जान-पहचान वाले है। अगर कोई परेशानी आएगी तो उनकी सहायता ले लेंगे। परन्तु गुरु ने बताया कि वह वहां पर किसी को भी नहीं जानता है। इस पर तहसीलदार एवं थानेदार ने कहा कि चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि हम वहां शाम को जल्दी पहुंच कर होटल में रुककर अगले दिन सुबह घूमकर शाम को जल्दी ही वापस आ जायेंगे, इसलिए अधिक सामान ले जाने की आवश्यकता नहीं है। अगर आवश्यकता होगी तो हम दोनों संभाल लेंगे। इस प्रकार तीनों हरिद्वार जाने के लिए चार बजे वाली रेलगाड़ी से चल पड़े। उस दिन रेलगाड़ी चार घंटे की देरी से थी। इंतजार करते-करते रात हो गई। सर्दी की अंधेरी रात थी, साथ ही ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। सर्दी से तीनों का हाल-बेहाल था। रेलगाड़ी स्टेशन पर पहुंची तो वह पूरी तरह से भरी हुई थी। किसी तरह से तीनों धक्का-मुक्की करते हुए डिब्बे में पहुंच तो गये, परन्तु अन्दर तिल रखने की भी जगह नहीं थी। अचानक उन्होंने देखा कि एक सीट पर एक आदमी कम्बल ओढ़े लेटा हुआ था। थानेदार ने अपनी अकड़ दर्शाते हुए उस आदमी को उठने के लिए कहा। जब उस आदमी ने कंबल उठाया तो थानेदार उसे देखकर खुश होते हुए बोला- गब्बर तुम, जल्दी से सीट खाली करो, क्योंकि मै एवं मेरे दोस्तों को सीट पर बैठना है। इस पर गब्बर ने मना कर दिया कि वह सीट खाली नहीं करेगा। थानेदार अपनी अकड़ में बोला कि तुम्हें उठना ही होगा। इस पर गब्बर बोला कि यह आप का थाना नहीं है जोकि अकड़ दिखा रहे हो, अब आप सेवानिवृत हो चुके हो, आपकी धौंस मेरे पर नहीं चलेगी। थानेदार ने देखा कि धौंस से काम नहीं चलेगा तो उसने गब्बर से कहा कि उसने कई बार उसे जेल जाने से बचाया है। इस पर गब्बर बोला कि आपने कोई काम मुफ्त में नहीं किया, इसके बदले में रिश्वत ली। अत: मैं नहीं उठने वाला। गब्बर एक ताकतवर आदमी था, उसके साथ बहस करने से कोई फायदा नहीं था। तीनों चुपचाप एक कोने में सर्दी से ठिठुरते हुए बैठे रहे। देर रात हरिद्वार पहुंचे, जैसे ही स्टेशन से बाहर निकले तो अचानक कुछ गुंडे उनसे सब सामान छीनकर भाग गए। थोड़ी देर में आसमान में बादल छा गये और बारिश होने लगी। चारों ओर कीचड़ ही कीचड़ हो गया। बारिश में भीगने से तीनों की हालत ख़राब हो गयी। तीनों कीचड़ से लथपथ थे और पहचान में भी नहीं आ रहे थे। पूछते-पूछते होटल में पहुंचे तो होटल मालिक ने तीनों को अन्दर नहीं आने दिया। इस पर तहसीलदार ने होटल मालिक को बताया कि 'मैं तहसीलदार हूं जिसने आपको अनधिकृत रूप से होटल खोलने की इजाजत दी

थी।' इस पर होटल मालिक ने कहा कि आपने कोई अहसान नहीं किया। इसके बदले हमने आपको रिश्वत दी थी, और अपने आदमियों से उन तीनों को होटल से बाहर निकाल दिया। सर्दी की घनघोर रात में तीनों कंपकंपाते हुए इधर-उधर भटक रहे थे। अचानक कहीं से एक आदमी आया व गुरु के पांव में गिरकर बोला, 'गुरूजी, मै आपका शिष्य! अहोभाग्य हमारे आप हमारी नगरी में पधारे हैं, इसलिए आप हमारी छोटी सी कुटिया में आथित्य सत्कार स्वीकार करें। गुरूजी ने झिझकते हुए बताया कि 'मैं अकेला नहीं हूं, मेरे साथ दो लोग और भी हैं।' इस पर वह युवक बोला कि इसमें घबराने एवं संकोच करने की आवश्यकता नहीं है, आपके आशीर्वाद से मैंने यहाँ पर रहने के लिए घर बना लिया है जिसमें दस लोगों के रहने की व्यवस्था है, बिना संकोच के उन्हें भी साथ ले चलिए। तीनों उस युवक के साथ उसके घर चल दिए। युवक ने उन्हें घर ले जाकर नहाने के लिए गर्म पानी एवं सूखे कपड़ों की व्यवस्था की। तीनों के स्नान करने के बाद उनके लिए गर्म एवं स्वादिष्ट भोजन की भी व्यवस्था की। तीनों भोजन करके शांतिपूर्वक सो गए। सुबह युवक ने उनके लिए नाश्ते एवं हरिद्वार में घूमने की पूरी व्यवस्था की। हरिद्वार घूमने के बाद वे वापस अपने गाँव आ गये तथा गुरु को धन्यवाद दिया और उसके कर्म को श्रेष्ठ बताया।

सबसे कीमती चीज

रीना

एक जाने माने स्पीकर ने हाथ में पांच सौ का नोट लहराते हुए अपने सेमीनार की शुरूआत की। हाल में बैठे सैकड़ों लोगों से उसने पूछा "ये पांच सौ का नोट कौन लेना चाहता है। हाथ उठने शुरू हो गए। फिर उसने कहा मैं इस नोट को आपमें से किसी एक को दूंगा, पर उससे पहले मुझे यह कर लेने दीजिए और उसने नोट को मुट्ठी में मरोड़ना शुरू कर दिया और फिर उसने पूछा कौन है जो अब भी यह नोट लेना चाहता है। अभी भी लोगों के हाथ उठने शुरू हो गए। उसने कहा अच्छा अगर मैं ये कर दूं और उसने नोट को नीचे गिराकर पैरों से कुचलना शुरू कर दिया। उसने नोट को उठाया वह बिल्कुल गंदा हो गया था। क्या अभी भी कोई है जो इसे लेना चाहता है और एक बार फिर हाथ उठने शुरू हो गए। दोस्तों आप लोगों ने आज एक महत्वपूर्ण पाठ सीखा है, मैंने इस नोट के साथ इतना कुछ किया पर फिर भी आप इसे लेना चाहते हैं क्योंकि ये सब होने के बावजूद नोट की कीमत घटी नहीं, उसका मूल्य अभी भी पांच सौ है।

जीवन में कई बार हम गिरते हैं, हारते हैं, हमारे लिए हुए निर्णय हमें मिट्टी में मिला देते हैं, हमें ऐसा लगने लगता है कि हमारी कोई कीमत नहीं है, लेकिन हमारे साथ चाहे जो हुआ हो या भविष्य में जो हो जाए हमारा मूल्य कम नहीं होता। हम स्पेशल हैं इस बात को कभी मत भूलिए। कभी भी बीते हुए कल की निराशा को आने वाले कल के सपनों को बर्बाद मत करने दीजिए। याद रखिए आपके पास जो सबसे कीमती चीज है वो है आपका जीवन।

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

भावभीनी विदाई

सोनू कुमार

कार्यालय एक परिवार की तरह होता है, जिसमें सभी कर्मचारी पारिवारिक सदस्यों की भांति सुख-दुःख में एक-दूसरे के काम आते हैं। हमारा महत्वपूर्ण समय भी कार्यालय में ही व्यतीत होता है। अधिकारियों और वरिष्ठ लोगों से समय-समय पर जीवन में कुछ नया और कार्य को बेहतर तरीके से करने के लिये मार्गदर्शन मिलता रहता है। समय-समय पर कार्यालय में होने वाले सांस्कृतिक, सेवानिवृति और अन्य कार्यक्रमों में जब पूरा कार्यालय उमड़ पड़ता है तो उन कार्यक्रमों में चार चाँद लग जाते हैं। परिवार का कोई भी सदस्य जब अकस्मात ही स्वर्गलोक सिधार जाता है तो पूरे परिवार पर दुःखों का पहाड़ सा टूट पड़ता है और हमारे हृदय को उद्वेलित कर देता है। उस दुःख की घड़ी में उनके साथ सांझा किए वक्त की याद आती है। हमारे कार्यालय से श्री सतबीर सिंह मलिक, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी के पद से फरवरी 2020 में अच्छे स्वास्थ्य और भरे पूरे परिवार के साथ सेवानिवृत्त हुए थे और उनकी सेवानिवृत्ति पर कार्यालय में अच्छे कार्यक्रम हुए थे। उनकी सेवानिवृत्ति के एक सप्ताह के भीतर ही उनका देहांत होना व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए एक बहुत बड़ी ठेस थी। मुझे उनके साथ लगभग छः माह एक ही लेखापरीक्षा दल में कार्य करने का मौका मिला, वे खुशमिजाज स्वभाव के व्यक्ति थे। आज के इस संसार में उनकी हंसी एक नए जोश और ख़ुशी का संचार करती थी। उन्हें कार्यालय में कार्यरत सभी अधिकारियों, कर्मचारियों के नाम और उनके होम टाउन जुबानी याद थे और सबके साथ उनके अच्छे संबंध थे। वे बेबाक स्वभाव के व्यक्ति थे। जब भी मैं उनके साथ फील्ड में जाने के लिए यात्रा पर निकलता था तो उनके साथ काफी राजनीतिक चर्चायें होती थी। उन्हें हरियाणा की राजनीति की काफी समझ थी और उनके पास राजनीतिक किस्सों का असीम भंडार था। वे अपनी बातों से हमारा खूब मन बहलाते थे। वे मुझे एक बच्चे की तरह समझाते थे और समय-समय पर मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते थे। ऑडिट यूनिट से रिकॉर्ड उपलब्ध कराने और ऑडिट आपत्ति को सही ढंग से प्रस्तुत करने में उनका कोई सानी नहीं था। मेरे अनुरोध पर उन्होंने दिसम्बर 2019 में अपने परिवार के साथ असम राज्य की यादगार यात्रा की। उनके देहांत से एक दिन पहले भी वे मुझे, हमारे कार्यालय के सहकर्मी की माताजी के देहावसान उपरांत आयोजित शोक सभा में मिले थे। उनकी असमय सांसारिक विदाई से मैं काफी स्तब्ध हुआ। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि भगवान उनकी आत्मा को शांति दें और उनके परिवार को इस दुःख की घड़ी से बाहर निकलने का सबल प्रदान करें।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

महात्मा गांधी

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

मदन मोहन मालवीय

जिम्मेवार कौन?

सोनू कुमार

आज का युग भागदौड़ भरा है। हम जीवन की इस आपाधापी में सब कुछ भूलते जा रहे हैं। हम अपने बच्चों से ज्यादा अपेक्षा करने लग गये हैं और उनपर जबरदस्ती का बोझ डालकर उन्हें तनावग्रस्त कर रहे हैं। अधिक से अधिक नम्बरों की होड़ और सबसे आगे निकलने की चाह ने मानव को खोखला बना दिया है। हम अपने बचपन में खेलों और त्योहारों को बड़े उत्साहपूर्ण तरीके से मनाते थे, परन्तु आज के युग में त्योहारों का महत्व घटता जा रहा है। सोशल मीडिया पर पोस्ट डालकर ही त्योहार, जन्मदिवस इत्यादि की बधाई देकर इतिश्री कर ली जाती है। सोशल मीडिया के ज्यादा चलन ने हमें असली रिश्तों से दूर कर दिया है और मानव आभासी दुनिया में रहने लग गया है। इसके ज्यादा प्रभाव के कारण हम घर पर ही रहकर आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं। मशीनीकरण और तकनीकी ने कार्यों को तो आसान कर दिया है परन्तु इनसे मानव सुस्त और आराम पसंद हो गया है। बचपन में हम मिट्टी में खूब खेलते थे और फिर बड़े होने पर मैदानों में खेले जाने वाले खेल खेलते थे। आज हम अपने बच्चों को मिट्टी में नहीं खेलने देते क्योंकि हमें लगता है कि इससे संक्रमण हो जायेगा और बच्चे के कपड़े गंदे हो जायेंगे। मैदान के खेलों की जगह आज वीडियो और कंप्यूटर खेलों ने ले ली है। बचपन के समय दी जाने वाली घुट्टी की जगह आज बाजार में मिलने वाली अंग्रेजी दवाओं ने ले ली है। सेहतमंद खाने की बजाय आज के बच्चे बर्गर, पिज्जा, कुरकुरे इत्यादि खाना ज्यादा पसंद करते हैं, जिनके कारण उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती जा रही है। आज का युवा अपने कैरियर के प्रति ज्यादा सचेत हुआ है। भागदौड़ और मशीनीकरण ने मानव को कुंठित कर दिया है। वैश्वीकरण के कारण रोजगार सृजन तो हुआ है परंतु इसमें कुछ ही लोगों को भारी भरकम वेतन मिल पाता है और अन्य लोगों को बहुत ही कम वेतन मिलता है। इस कारण समाज में काफी अंतर देखने को मिलता है और आपराधिक गतिविधियों के ग्राफ में वृद्धि हुई है। सरकारी नौकरियों की घटती संख्या और निजीकरण ने भी आज के युवा को काफी प्रभावित किया है। नशे की लत के कारण भी युवा पथभ्रष्ट हुए हैं। माता-पिता द्वारा अपने बच्चों को कम समय देने के कारण पारिवारिक रिश्तों में कमियां आईं हैं। आगे निकलने की होड़ ने मानव को मानव का दुश्मन बना दिया है। पहले के खान-पान में जो बात होती थी, वो आज के खान-पान में नजर नहीं आती है। हमारे देश का प्रति हेक्टयर फसल उत्पादन तो कई गुणा बढ़ा है परन्तु फसलों में डाले जाने वाले यूरिया और रासायनिक खादों ने मानव को कई बीमारियों का शिकार बना दिया है। हमें जैविक खेती को अपनाना होगा तभी हम बीमारियों से बच पायेंगे। बच्चों को अच्छा खाना और परिवेश देकर ही हम भारत के भविष्य को सुधार सकते हैं।

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

डॉ राजेन्द्र प्रसाद

प्रवासी मजदूर: मजदूर या मजबूर

मनीष देव

"हम मेहनत कश,
जगवालों से जब अपना हिस्सा मांगेंगे।
इक खेत नहीं,
इक देश नहीं, हम सारी दुनिया मांगेंगे।"

'फैज अहमद फैज' ने अपनी इस रचना के माध्यम से न केवल श्रमिक वर्ग को सम्मान दिलाया बल्कि उनके हक के लिए आवाज भी बुलंद की।

वर्तमान परिदृश्य में 'प्रवासी मजदूर' शब्द कोविड-19 एवं लॉकडाउन के कारण लोक परिचर्चा में इस कदर शामिल हुआ जो आज से पहले शायद कभी नहीं हुआ था। आमतौर पर वे लोग जो अपने देश या प्रांत को छोड़कर रोजगार की तलाश में दूसरे मुल्कों या प्रांत में जाकर रहते हैं उन्हें प्रवासी कहा जाता है। प्रवासी एवं शरणार्थी में फर्क इतना है कि प्रवासी जन अपनी इच्छा से लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का इस्तेमाल करते हुए दूसरे क्षेत्रों में जाते हैं जबकि शरणार्थी युद्ध या किसी विषम परिस्थिति के कारण। भारत के मजदूर भी अपनी विषम परिस्थितियों के कारण ही मजबूर होकर शहर की ओर पलायन करते हैं।

कोरोना महामारी के फैलाव और लॉकडाउन की लंबी अवधियों के बीच भारत में श्रमिकों के हालात और अर्थव्यवस्था में उनके योगदान के कुछ अनछुए और अनदेखे पहलू भी देखने को मिले हैं। पहली बार श्रमशक्ति की मुश्किलें ही नहीं उनसे जुड़ी पेचीदगियां भी खुलकर दिखी हैं। प्रवासी मजदूरों के बीच जान बचाने और अपने घरों को लौट जाने की देशव्यापी दहशत के बीच सरकारों की मशीनरी भी असहाय सी दिखी।

स्वयं को विकास के कई पैमानों पर अव्वल मानने वाले राज्य भी अपने-अपने घरों को बेतहाशा लौटते मजदूरों को रोके रखने के उपाय करने में पीछे ही रहे। कोरोना संकट के बीच आने वाले दिनों के लिए श्रमशक्ति सुधार से जुड़े सवाल भी उठे हैं और संघीय ढांचे वाले भारत के लिए विकास कार्यक्रमों और नीतियों पर प्रश्न चिन्ह भी उठे हैं एवं नए सिरे से चिंतन और कार्यान्वयन की जरूरत भी दिखी है।

शहरों की तंग गलियों के अपने अंधेरे कमरों से निकलकर सैकड़ों किलोमीटर दूर अपने गांव के घरों की ओर मजबूर मजदूर पैदल ही निकल पड़े, जिसमें कितनों ने सफर के बीच में ही अपना दम तोड़ दिया। कई सौभाग्यशाली भी रहे जो साइकिल या पैदल अपने घरों तक पहुंचने में सफल रहे। अपने बच्चों और सामान के साथ सड़कों पर पैदल चलते लोगों के हुजूम का दृश्य अप्रत्याशित था। 22 मार्च को जनता कर्फ्यु के दिन कोविड के विरूद्ध मोर्चा संभाल रहे लोगों के सम्मान में ताली बजाकर या बर्तन पीटकर जरूर उन मजदूरों ने भी कृतज्ञता जताई होगी जिन्हें बाद में अपने परिवार के साथ दोपहर की गर्मी में लंबी यात्रा पर पैदल निकलना पड़ा। इनकी मार्मिक तस्वीरें मन को झकझोर रही थीं। यह दृश्य बताता है कि कोविड-19 ने लोगों के जिंदगी में कितना तूफान ला दिया है।

बड़े शहरों की मजदूर बस्तियां भले ही तंग क्यों न हो, वहां न पानी हो न हवा हो लेकिन उन बंद कमरों में इन मजदूरों की पहचान रहती थी, जिसके दम पर वह गांवों में आदमी गिने जाते थे। जब मजदूर और उनका परिवार होली और दिवाली में या किसी अन्य पर्व में घर जाते थे तो दूर से ही कपड़ों की चमक और सामानों से गांव में उम्मीद की रोशनी दिखती थी। अब जब कई हफ्तों तक पैदल चलने के बाद वे अपने गांव पहुंचे तो कपड़ों की चमक जा चुकी थी, चेहरे की थकान और पैरों के छाले सब कुछ बयां कर रहे थे, वे उसी गांव का सामना करने से डर रहे थे जहां वे पले-बढ़े थे और जहां वे विजेता की तरह आया करते थे।

भारत के लोकतांत्रिक राजनीतिक इतिहास में न जाने इन गरीब मजदूरों ने कितने दलों के नेताओं की तस्वीरें और झंडा उठाकर उनकी जयकार की होगी लेकिन आज जब वे मजबूर हैं तो कोई भी सामने नहीं आया। बहुत सारे समाजसेवी व्यक्तियों और संगठनों ने रास्ते में मजबूर मजदूरों को खाना दिया लेकिन यह सहायता उनके लिए नाकाफी थी। खैर उनकी यह सहायता मजबूर मजदूरों के जहन में एक अमिट छाप छोड़ गई। फिल्म अभिनेता सोनू सूद द्वारा किया गया सहायता प्रयास कई प्रवासियों के लिए हमेशा-हमेशा के लिए उनके मन-मस्तिक में कैद हो गया।

कोरोना संकट के दौर में ये भी एक सबक है कि असंगठित क्षेत्र के इस स्वरूप को बदलने के नीतिगत फैसले होने चाहिए। कुशल या अकुशल मजदूरों के पलायन को रोकने और आर्थिक विकास का मजबूत आधार बनाने के लिए हर राज्य में वहां की परिस्थितियों के अनुरूप प्रयास जरूरी है। नौकरी की तलाश में वही लोग बाहर निकलते हैं जिन्हें अपने यहां कोई संभावना नहीं दिखती। पलायन करना कोई शौक नहीं है वरन् यह एक मजबूरी है जिसे आज नहीं तो कल सरकारों को समझना ही होगा और इसके लिए कई रचनात्मक प्रयास करने होंगे।

रेल की पटरियों पर कटते, नंगे पैर गर्म तपती सड़क पर चलते, साइकिल से अपने पिता को लादकर कोसों का सफर करती बेटी और सड़क दुर्घटना में मरते प्रवासियों की विभिषिका का चित्रण क्या कोई समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र व्यक्त कर पाएगा? उनकी संवेदनाओं और पीड़ा को क्या कोई समझ पाएगा?

यह समय भी बीत जायेगा

कुमारी हर्षिता शर्मा

यह समय भी बीत जायेगा,
यह समय भी बीत जायेगा।

अंग्रेजों को बाहर निकाला था जैसे,
कोरोना को भी हराएंगे वैसे।

इस बार छः फीट सबसे दूर है रहना,
ऐसे ही एकता का प्रमाण है देना।

हमें कुछ बातों का रखना होगा ध्यान,
बाहर मास्क लगाये बिना मत निकलना श्रीमान।

बार-बार धोना है साबुन से हाथ,
दूर के रिश्तेदारों से करो बात टेक्नोलॉजी के साथ।

शेयरिंग इज केयरिंग के विचार को थोड़ा बदलो,
अब दूसरों से सिर्फ बात शेयर करना सीख लो।

घरों में रहकर खुद को रखो दूर तनाव से,
परिवार के साथ समय बिताओ व कुछ नया सीखो खुशी से।

हमें नहीं है छूना अपना मुंह, नाक व कान,
सरकार द्वारा बनाये गये नियमों का रखना होगा मान।

यह समय भी बीत जायेगा, खुशी के पल लौट आयेंगे,
क्योंकि यह समय जल्द ही गुजर जायेगा।

रक्तदान

स्वतंत्रता दिवस

दायरों की सियासत

मुनीष भाटिया

दायरों की सियासत से
गहरा है जिन्हें प्यार
अक्सर दीवारें गिर
जाने के बाद
वही दरवाजों पर ताले
जड़े रखते हैं।

अहम् की सब दीवारें
तो गिरा दीं हमने
पर दिल के दरवाजों पर
ताले अब भी
जड़ रखे हैं तुमने।

सियासत में हर पल
बदलते हैं लोग नकाब
किन्तु अल्फाजों से उनके
मिल ही जाता है
किरदार का हिसाब।

रुसवाई करें आज
तो क्या किसी से
रिश्तों के सौदागर
निवेश का हिसाब
बखूबी रखने लगे हैं।

जुल्म भी करते हैं
और इनायत भी
बनके महबूब
फिर भी दिल के करीब
रहते हैं बेवफा।

अनकहे ही रहते हैं
अक्सर चाहतों के
अल्फाज हमारे
क्योंकि अदा है उनकी
जो दूर-दूर रहते हैं।

ये कुचक्र सियासतदानों का

राम कुमार

क्रूरता बलिदान जवानों का,
ये कुचक्र सियासतदानों का।

सत्ता के भूखे इंसानों का,
ये कुचक्र सियासतदानों का।

जनकल्याण को भुला
बढ़ते स्वार्थ के पैमानों का,
ये कुचक्र सियासतदानों का।

करते सौदा अबोध
जनता के अरमानों का,
ये कुचक्र सियासतदानों का।

अमन शांति पर पड़ते
साम्प्रदायिकता के निशानों का,
ये कुचक्र सियासतदानों का।

लोकतंत्र के बढ़ते अपमानों का,
ये कुचक्र सियासतदानों का।

युवाओं की योग्यता को
स्वाहा करते हैवानों का,
ये कुचक्र सियासतदानों का।

भौतिकता से ह्रास करता
मानवता के सोपानों का,
ये कुचक्र सियासतदानों का।

शोषण करता मजदूरों
और किसानों का,
ये कुचक्र सियासतदानों का।

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

स्वामी दयानंद

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।

रविशंकर शुक्ल

नई पीढ़ी बनाम पुरानी पीढ़ी

गौतम कुमार

नई पीढ़ी कंप्यूटर की ज्ञाता है
उसको हाथ से काम करना नहीं भाता है
पत्र नहीं लिखती वो कंप्यूटर लैपटॉप से मेल करती है
पीछे मुड़कर नहीं देखती आगे ही आगे वो चलती है।

पुरानी पीढ़ी आदर्शवादी तो नई पीढ़ी संघर्षवादी
पुरानी पीढ़ी की मान्यताएं तो नई पीढ़ी की आकांक्षाएं
पुरानी पीढ़ी अपेक्षावादी तो नई पीढ़ी उपेक्षावादी है।

पुरानी पीढ़ी अनुशासित और सधी हुई है
नई पीढ़ी मशीनी युग में पली बढ़ी है।

पुरानी पीढ़ी हाथ से बना खाना चाहती है
नई पीढ़ी बाजार से मंगवा कर खाती है।

पुरानी पीढ़ी परियों की कहानियां सुनाती है
नई पीढ़ी कंप्यूटर पे गेम चलाती है
न कुछ सुनती न ही सुनाती है
मोबाइल ही उनका साथी है।

परिवार के साथ बैठना
उनके लिए समय की बर्बादी है
नई पीढ़ी मॉल में शॉपिंग को जाती है
घर की बनी चीजें उन्हें रास नहीं आती हैं।

पुरानी पीढ़ी अभावों में पली है
पैसों की कीमत जानती है
नई पीढ़ी केवल पैसे की डींग हांकती है।

लॉकडाउन

कुसुम

ये मास्क, ये गलव्ज, ये दुपट्टों की दुनिया,
ये सेनिटाइजर मांगती हथेलियों की दुनिया
ये एस्ट्रोनाट वाली पोशाकों की दुनिया,
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है,
ये लॉकडाउन अगर खुल भी जाए तो क्या है।

यह दो गज की दूरी, परहेजों की मजबूरी
हाथ मिलाने के बंधन, डिस्टेंसिंग जरूरी,
ये थाली का बैंगन या हिरन की कस्तूरी
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है,
ये लॉकडाउन अगर खुल भी जाए तो क्या है।

न चूड़ी, न घड़ियां, न कंगन अंगूठी
हर शय में कोरोना, हरेक चीज झूठी,
छूटे सोलह श्रृंगार, लिप्सिटिक तक छूटी,
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है,
ये लॉकडाउन अगर खुल भी जाए तो क्या है।

न गोलगप्पे की रेहड़ी, न टिक्की के ठेले,
न बर्गर, न मोमोज, न भटूरे के छल्ले,
न किट्टी, न गॉसिप, न सेल्फी, न मेले,
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है,
ये लॉकडाउन अगर खुल भी जाए तो क्या है।

बोलो मां

मनमीत कौर

तिनका-तिनका जोड़ा तुमने,
अपना घर बनाया तुमने,
अपने तन के सुंदर पौधे पर
हम बच्चों को फूल सा सजाया तुमने,
हमारे सब दुख उठाए और
हमारी खुशियों में सुख ढूंढा तुमने,
हमारे लिए लोरियां गाईं और
हमारे सपनों में खुद के सपने सजाए तुमने

हम बच्चे अपनी राह चले गए, और तुम,
दूर खड़ी अपना मीठा आशीर्वाद देती रहीं।

पल बीते क्षण बीते समय पग-पग चलता रहा,
अपना हिसाब लिखता रहा, और आज?

आज धीरे-धीरे तुम जिंदगी के
उस मुकाम पर आ पहुंची,
जहां तुम थकी खड़ी हो,
शरीर से और मन से भी।

मेरा मन मानने को तैयार नहीं,
मेरा अन्तर्मन सुनने को तैयार नहीं,
क्या तुम्हारे जिस्म के मिटने से
सब कुछ खत्म हो जाएगा?

क्या चली जाओगी तुम
अपने प्यार की झोली समेट कर?

क्या रह जाएंगे हम
तुम्हारी भोली सूरत देखने को तरसते हुए?
क्या रह जाएंगे हम
तुम्हारी गोदी में अपना बचपन ढूंढते हुए?

बोलो मां? क्या कह जाओगी
इन चांद, सूरज, धरती और तारों से?
इन राह गुजारों से नदिया के बहते धारों से?
क्या कह जाओगी मां?
किसे सौंप जाओगी हमें मां?

कोरोना और इंसान

अनुराग भारती

हे इंसान तू कोरोना से,
इतना घबराता क्यों है?
इतनी ही है घबराहट,
तो बाहर जाता क्यों है?
बाहर जाकर इस बीमारी को,
घर में लाता क्यों है?
अपने परिवार के जीवन को,
दांव पर लगाता क्यों है?
इतनी ही है घबराहट है तो,
जानवरों को मारकर खाता क्यों है?
इस प्यारी प्रकृति पर,
कहर बरपाता क्यों है?
अब प्रकृति ने लिया है बदला,
तेरा दिल दहल जाता क्यों है?
चलो जो हुआ सो हुआ,
अब तू संभल नहीं जाता क्यों है?
आगे से प्रकृति से नहीं करेगा खिलवाड़,
ये शपथ नहीं खाता क्यों है?
हे इंसान तू कोरोना से,
इतना घबराता क्यों है?

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।

मजदूर

बीरेन्द्र कुमार

ये ईंट पे ईंट लगाते हैं
पुल और बांध बनाते हैं
आलीशान महल बनाते हैं
जीने का अंदाज सिखाते हैं।

भव्य इमारतों में रहने वाले सभ्य कहलाते हैं
जो इन्हें बनाते हैं, अपना खून पसीना बहाते हैं
सबको सुख-सुविधाएं प्रदान करवा
खुद झोपड़ियों में जीवन बिताते हैं
सबके एशो-आराम का ख्याल रखने वाले
ये मजदूर कहलाते हैं।

जो कभी भरपेट तो कभी खाली पेट
ही सो जाते हैं
अपनी व्यथा किसी को नहीं सुनाते हैं
ये महलों में रहने वाले
इनका दर्द समझ नहीं पाते हैं
इनको हेय दृष्टि से देखते हैं और
खुद को अमीरजादे बताते हैं।

इन गरीबों के सिर पर ऐश करने वालों
इनका भी कुछ ख्याल करो
न हनन करो इनके अधिकारों का
इनका जीवन भी सुधारो
कुछ तो इनका कर्ज उतारो
इनसे भी प्यार करो।

इनकी कर्मठता से न इंकार करो
ये तुम्हारी दया पर नहीं
तुम इनकी दया पर निर्भर हो
ये महल बनाते हैं, रंगीन सपने दिखाते हैं
खुद सड़कों के किनारे सोते और
तुम्हें महलों में सुलाते हैं।

कहां गए देश के संस्कार

अमित लाठर

वाह रे मेरे हिंदुस्तान, क्यों खो रहा अपनी पहचान
बिना संस्कार के हो रहा, मेरा देश महान
भाई-चारा तोड़कर, समाज में चलते सीना तान
देशद्रोही बनकर, ले रहे देशभक्तों के प्राण
क्या यही था, हमारे पूर्वजों का ज्ञान
वाह रे मेरे हिंदुस्तान, क्यों खो रहा अपनी पहचान।

आज मानव ने, किया समाज को बेहाल
दुनिया तो बदली, बदल गई अपनों की चाल
बात-बात पर खूनी रिश्ते, हो रहे हैं लाल
अपनी झूठी शान के आगे, नहीं रख रहे बुजुर्गों का ध्यान
वाह रे मेरे हिंदुस्तान, क्यों खो रहा अपनी पहचान।

लॉकडाउन में दिखाई दिए, भारत के संस्कार
धर्म के नाम पर बंटकर चला रहे देखो तलवार
गरीबों, बेसहारा, मेहनती लोगों पर, हो रहे अत्याचार
मां-बाप की मौत पर, बेटा नहीं शव लेने को तैयार
कुर्सी व गंदी राजनीति के खेल में, किसी की भी ले-ले जान
वाह रे मेरे हिंदुस्तान, क्यों खो रहा अपनी पहचान।

आओ मिलकर मिटाएं, आपसी दूरियों को
भाई-चारा बनाकर खत्म करें, सब मजबूरियों को
मां-बाप, दादा-दादी, चाचा, बुआ के, रिश्तों के जोड़ें तार
मौम-डैड, अंकल-आंटी में नहीं दिखाई देते संस्कार
वाह रे मेरे हिंदुस्तान, क्यों खो रहा अपनी पहचान।

जिंदगी

रीना

दो पल की जिंदगी है आज बचपन कल जवानी
परसों बुढ़ापा, फिर खत्म कहानी है
चलो हंसकर जिएं, चलो खुलकर जिएं,
फिर न आने वाली यह रात सुहानी,
फिर न आने वाला यह दिन सुहाना।

कल जो बीत गया सो बीत गया,
क्यों करते हो आने वाले कल की चिंता,
आज और अभी जीओ, दूसरा पल हो न हो।

आओ जिंदगी को गाते चलें,
कुछ बातें मन की करते चलें,
रूठों को मनाते चलें।

आओ जीवन की कहानी प्यार से लिखते चलें,
कुछ बोल मीठे बोलते चलें,
कुछ रिश्ते नए बनाते चले।

क्या लाए थे क्या ले जाएंगे,
आओ कुछ लुटाते चलें,
आओ सब के साथ चलते चलें,
जिंदगी का सफर यूं ही काटते चलें।

मेरा गांव

प्रेम सिंह रावत

बड़ा भोला बड़ा सादा बड़ा सच्चा है,
तेरे शहर से तो मेरा गांव अच्छा है।

वहां मुझे मेरे पिताजी के नाम से जाना जाता है,
और यहां मकान नंबर से पहचाना जाता है।

वहां फटे कपड़ों में भी तन को ढका जाता है,
यहां खुले बदन पे टैटू छापा जाता है।

यहां कोठी है, बंगले हैं और कार है,
वहां परिवार है और संस्कार है।

यहां चीखों की आवाजें दीवार से टकराती हैं,
वहां दूसरों की सिसकियां भी सुन ली जाती हैं।

यहां शोर-शराबे में कहीं खो जाता हूं,
वहां टूटी खटिया पर भी आराम से सो जाता हूं।

मत समझो कम हमें कि हम गांव से आए हैं,
तेरे शहर के बाजार मेरे गांव ने ही सजाए हैं।

वहां इज्जत पे सर सूरज की तरफ टलते हैं,
चल आज हम उसी गांव में चलते हैं।

मेरी प्रिय बेटी....

भावना सूद

जितना जीवन मैंने जाना समझा,
बतलाना चाहती हूं,
तुम्हें जीवन सिखलाना चाहती हूं,
इतना कोमल, पुष्प ना बनना,
कि हवा का झोंका, असर कर जाये,
बनना तुम्हें, एक वृक्ष समान,
सुख-दु:ख तो हैं, ऋतुओं समान,
खुश होकर जीना, सिखलाना चाहती हूं,
आज तुम्हें मैं समझाना चाहती हूं।

आंख मूंद विश्वास न करना,
अच्छी संगति में ही है रहना,
मिलो जब अजनबी किसी से,
तो हृदय से नहीं, बुद्धि से सुनना,
सजगता सहित जीना, सिखलाना चाहती हूं,
आज तुम्हें मैं समझाना चाहती हूं।

वक्त है बहुमूल्य, इसे व्यर्थ न गंवाना,
अपने हर स्वप्न को, तुम्हें है पूरा करना,
गर राह पर हार भी गए, नहीं है घबराना,
आत्म विश्वास रख, मेहनत कर मंजिल है पाना,
आत्मनिर्भर बन, जीवन भर शान से जीना,
सिखलाना चाहती हूं,
आज तुम्हें मैं समझाना चाहती हूं।
जब बात आये, जीवन साथी चुनने की,
देह की सुंदरता छोड, हृदय को पढ़ना,
सोच समझ,संग वक्त बिता, निर्णय लेना,
इस रिश्ते संग परिवार है बनता,
प्यार सहित सम्मान है देना,
विश्वास पात्र बन, सर उठाकर जीना,
सिखलाना चाहती हूं,
आज तुम्हें मैं समझाना चाहती हूं।

कभी ऐसा कार्य न करना, नजरों को कभी, न झुकने देना,
रिश्ते नातों की परवाह करना,
पर हावी न उन्हें तुम, होने देना,
इच्छा पूर्ण कर, प्रेम से जीना, सिखलाना चाहती हूं,
आज तुम्हें मैं समझाना चाहती हूं।

गलत कभी न तुम्हें हैं करना, ना ही गलत है सहना,
गर गलती हो भी जाये, न दोहराने का प्रण है लेना,
बुरी नजरों से बच, अपने से सदा प्रेम है करना,
तिरस्कार जब कोई करें, निराश कभी न तुम्हें है होना,
मुस्कराकर, खुशियां फैलाकर जीना, सिखलाना चाहती हूं,
जितना मैंने जाना समझा,
आज तुम्हें, मैं समझाना चाहती हूं।

मेरा भारत महान

रमेश कुमार

जहाँ धर्म के जूनून में लोगों ने
छोड़ दी मानवता, बेच दिया ईमान,
बन गये नरभक्षी और हैवान.
वह है मेरा भारत महान।
जहाँ पत्थर की मूर्तियों के लिए'
बनाये जाते हैं स्वर्ण रथ एवं स्वर्ण मुकुट,
आडम्बरों पर बहाया जाता है धन अकूत,
किन्तु,
रोटी के टुकड़ों को तरसते हैं, नन्हे-नन्हे प्राण,
वह है मेरा भारत महान।
जहाँ नारी को,
उसके पति की चिता के साथ,
जिन्दा जलाकर,
किया जाता है, धर्म रक्षा का अभिमान,
वह है मेरा भारत महान।
जहाँ नारी को पूजे जाने की डींगे
हांकी जाती है नित्य,
किन्तु,
जुए में अपनी पत्नी को,
दांव पर लगाने वालों का,
अनेक अग्नि परीक्षाओं के बाद भी,
अपनी निर्दोष पत्नी को
कुल्टा कहकर त्यागने वालों का,
किया जाता है नित्य गुणगान
वह है मेरा भारत महान।
जहाँ अहिंसा एवं परोपकार की
की जाती है बातें नित्य,
किन्तु,
निज स्वार्थ सिद्धि के लिए
देवता को प्रसन्न करने के लिए,
काका जी लेते हैं भतीजी के प्राण,
वह है मेरा भारत महान।

कोरोना से पाएं निजात

हरभजन सिंह

चीन के वुहान शहर से शुरू हुआ वायरस कोरोना
इस वायरस ने नहीं छोड़ा विश्व का कोई कोना।

अलग-अलग शहर/देश घूम-घूम कर, परचम इसने लहराया,
मौत का इसने डाला पहरा, सबको अलग-अलग ठहराया।

आओ, हम सब मिलकर, पाएं कोरोना से निजात,
विनती करें प्रभु से, प्रभु तक पहुंचाएं अपनी बात।

विनती सुनो प्रभु मेरी, विश्व कोरोना से तोड़ो नाता,
हे मेरे प्रभु, आप ही हो हम सबके दाता।

दूर करो दु:ख-दर्द सब, दया करो भगवान,
मंदिर-मस्जिद, गिरजाघर-गुरूद्वारा, पुन:प्रकट हो दयावान।

आओ, हम सब मिलकर लड़ें कोरोना से जंग,
बहुत मचाया इसने हुड़दंग, बहुत कर लिया तंग।

मास्क पहनें, सेनिटाइजर/साबुन से हाथ धोएं,
घर में अभी हो जाएं बंद,
दूर भगाएं मिलकर इस वायरस को,
अलग-अलग से फिर हो जाएं संग
पर-हित पर-उपकार में, जीवन करें व्यतीत,
श्वास-श्वास में ही बसे, भगवान तेरी प्रीत।

नाम प्रभु आपका है "शान्त", आप ही नाथन के नाथ,
करूणा का प्रभु राखिए, विश्व के सिर पर हाथ।।।

प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृति का संचित प्रतिबिंब होता है।

मेरी जिंदगी

प्रेम ग्रोवर

दर्द कागज पर, मेरा बिकता रहा,
मैं बैचेन था, रात भर लिखता रहा.....
छू रहे थे सब बुलंदियाँ आसमान की,
मैं सितारों के बीच, चाँद की तरह छिपता रहा...
अकड़ होती तो, कब का टूट गया होता,
मैं था नाजुक डाली, जो सबके आगे झुकता रहा....
बदले यहाँ लोगों ने रंग अपने-अपने ढंग से,
रंग मेरा भी निखरा पर, मैं मेहंदी की तरह पिसता रहा....
जिनको जल्दी थी, वो बढ़ चले मंजिल की ओर,
मैं समंदर से राज, गहराई के सीखता रहा.....
जिंदगी कभी भी ले सकती है करवट,
तू गुमान न कर
बुलंदिया छू हज़ार, मगर उनके लिए
कोई गुनाह न कर...
बेतुके झगड़े कुछ इस तरह
ख़त्म कर दिए मैंने,
जहा गलती नहीं भी थी मेरी,
फिर भी हाथ जोड़ दिए मैंने,
हाथ जोड़ दिए मैंने।

पहले तोलो फिर मुंह खोलो

प्रेम ग्रोवर

जहां पर बोलना हो; वहां हम खामोश हो जाते हैं,
और जहां खामोश रहना हो; वहां मुंह खोल जाते हैं।
कटे जब शीश एक सैनिक का;
तो हम दीर्घ चुप्पी साध जाते,
कटे जो एक अदद सीन भी पिक्चर का;
तो हम कोहराम मचाते।
बड़े शोरूम व माल में कटाते जेब;
शान से हम अपनी,
मांगे मजदूर हक के भी अपने रूपए तो ठेंगा दिखाते।
नई नस्ल के बच्चे सुनाने में सौ बातें;
किंचित भी नहीं हिचकिचाते,
जो मां-बाप कुछ बोलें तो;
देकर ताने उनका कलेजा चीर जाते।
तूफान से आई तबाही को तो हम चुपचाप सहन कर जाते,
बिजली अगर चंद लम्हों को भी जाए तो सरकार को कोसों पानी पिलाते।
बनाते फिरते हैं रिश्ते जमाने भर में अक्सर हम,
मगर घर में बूढ़े मां-बाप के पास पल भर बैठना भूल जाते।
जहां पर बोलना हो; वहां हम खामोश हो जाते हैं,
और जहां खामोश रहना हो; वहां मुंह खोल जाते हैं।

कोरोना

ललित कुमार

कोरोना कोरोना कोरोना.....
जो भी तुम हो ना,
समझो ना हमको तुम बौना।
जब भी हम भारतीय एकजुट हुए,
पड़ता है हमेशा दुश्मन को रोना।
इसलिए तुम्हारा भी ये हश्र हो ना,
पड़ ना जाए तुम को भी रोना।
भाग जाओ भारत से तुम कोरोना
क्योंकि हम भारतीय अब नहीं चाहते
तुम्हारा बोझ ढोना।
आपस मे हमने बनाई है दूरी,
सीखा है बार-बार हाथों को धोना।
नहीं घूमते यूँ ही बाहर,
सीखा है चीजों को यूं ही न छूना।
कोरोना कोरोना कोरोना.....
जो भी तुम हो ना,
समझो ना हमको तुम बौना

कोरोना और प्रकृति

मनु अनेजा

जब-जब प्रकृति ने अपना प्रकोप इंसान को दिखाया है,
इंसान हुआ है बेबस, पड़ी उस पर कष्टों की छाया है।

कोरोना द्वारा प्रकृति ने अपना दम फिर से दिखाया है,
हमने की प्रकृति से छेड़छाड़, और ये ईनाम पाया है।

हमने काटे पेड़ व जंगल, जानवरों को उनके घरों से भगाया है,
इसलिए प्रकृति ने हमें अपने-अपने घरों में बेबस बिठाया है।

हमने मारे पशु-पक्षी, बेजुबानों को पिंजरों में पहुँचाया है,
इसलिए प्रकृति ने कोरोना से हमें घरों में कैद कराया है।

हमने किया जल दूषित, हवा प्रदूषित, धुआं कण-कण में छाया है,
तो प्रकृति ने भी कोरोना से फिर अपना स्वरूप वापस पाया है।

हम ही हैं जिम्मेदार कोरोना के लिए, ये अब समझ में आया है,
हम हैं प्रकृति के दोषी, उसकी सजा से आखिर कौन बच पाया है।

कोरोना और मजदूर

अंकित खोखर

इस महामारी का प्रकोप मजदूर पर कहर बनकर बरपा है,
पैरों में चप्पल नहीं, दाने-दाने को मजदूर तड़पा है।

काम धंधे छीने हैं इसने, इससे हर मजदूर कांपा है,
इसके डर से मजदूरों ने हजारों मीलों को अपने दो कदमों से नापा है।

कोई चढ़ा ट्रेनों में, कोई ट्रकों में, किसी ने साईकिल थामा है,
कुछ मर गए दुर्घटनाओं में, फिर भी हिम्मत का दामन अभी भी थामा है।

आए बहार इनकी भी जिंदगी में, ईश्वर से बस यही माँगा है,
जिनके कारण बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें, घर और खलिहान हैं।

हे ईश्वर! आज उनके ऊपर क्यों बस एक खुला आसमान है,
हो इनकी जिंदगी भी फिर से रोशन, ये हम सबका अरमान है।

आखिर इन्हीं के कारण ही बढ़ता है देश हमारा,
क्योंकि इनके हाथों में है हुनर, और ये करते मेहनत जी जान से।

हिंदी दिवस

निशा ढींगरा

इस वर्ष भी हम कार्यालय में
हिंदी दिवस मना रहे हैं,
हिंदी में कार्य करने का
संकल्प दोहरा रहे हैं,
अगले दिन हिंदी छोड़
अंग्रेजी अपना रहे हैं,
फिर भी शान से हम
हिंदी प्रेमी कहला रहे हैं।

हम कब तक यह हिंदी दिवस
मनाते रह जाएंगे,
हिंदी में काम करने का
सिर्फ संकल्प दोहराते रह जाएंगे,
हम कब तक मां को मॉम,
बाप को डैड बनाते रह जाएंगे,
हम कब तक हमारी
हिंदी मां को ठुकराकर,
विदेशी अंग्रेजी मम्मी को
अपनाते रह जाएंगे।

पिछले वर्ष जब हमने
हिंदी दिवस मनाया,
मैंने सच्चे मन से
अंग्रेजी छोड़ हिंदी को अपनाया,
पर स्वयं को कुछ
कठिनाइयों में पाया,
आटो रिक्शा वाले को
हिंदी में बताया,
क्या विश्वविद्यालय
ले चलोगे भाई,
उसने मुझे समझाया,
यहां तो कोई विश्वविद्यालय
नहीं है मैडम,
यूनिवर्सिटी जल्दी पहुंचना है
जब मैंने उसे बताया,
तो वह झल्लाते हुए चिल्लाया,
मैडम क्यों अंग्रेजी में
विश्वविद्यालय कह रही हो,
क्यों अपना और मेरा वक्त
बर्बाद किए जा रही हो,
हिंदी में यूनिवर्सिटी कहने को
क्यों कतराते हो,
लगता है मैडम अपनी हिंदी भाषा से
प्रेम नहीं करती हो।

एक दिन अनुभाग अधिकारी को
पत्र लिखकर, अंत में कृपया पावती
शीघ्र भेजने को लिखा,
शायद मुझसे पावती की जगह
पार्वती टाइप हो गया,
अगले दिन मैंने पार्वती को
अपनी सीट पर पाया,
उसने सोचा मैंने
उसका मजाक उड़ाया,
इसलिए आते ही वह मुझ पर
गुस्से से चिल्लाई,
और मैंने माफी मांगकर
उससे अपनी जान छुड़ाई,
फिर भी मैं हिंदी में
कार्य करने से नहीं घबराई।

विदेशी शान से हमारी
भाषा सीखकर,
आज हिंदी में महाविद्वान
कहलाए जा रहे हैं,
फिर हम अपनी
राष्ट्रभाषा हिंदी को,
अपनाने में क्यों कतरा रहे हैं।

आओ हम सब मिलकर
हिंदी दिवस का लाभ उठाएं,
अभी से सच्चे मन से अंग्रेजी छोड़,
अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी को अपनाएं,
और सच्चे भारतीय नागरिक कहलाएं।

जय हिंदी, जय भारत।

दिनांक 13.09.2019 से 26.09.2019 के दौरान हिंदी पखवाड़े में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारी

प्रतियोगिता का नाम	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
	(सर्व श्री/सुश्री)		
हिंदी में 20,000 शब्दों के दावों का सत्यापन	रमेश कुमार, स.ले.प.अ.	कुलदीप सिंह, व.ले.प. अनूप सिंह, व.ले.प.	अमित लाठर, व.ले.प. मनमीत कौर, व.ले.प. हेमन्त मनूजा, व.ले.प.
हिंदी निबन्ध	मनु अनेजा, ले.प.	ज्योति कुमारी, डी.ई.ओ.	अनूप सिंह, व.ले.प.
श्रुत लेख	अनूप सिंह, व.ले.प.	मनु अनेजा, ले.प.	नवीन कुमार, व.ले.प.
हिंदी टंकण	विकास लाठर, डी.ई.ओ.	अखिलेश कुमार, डी.ई.ओ.	श्रीकिशन मीना, डी.ई.ओ.
सामान्य ज्ञान	प्रवेद कुमार, स.ले.प.अ. आशीष सचान, व.ले.प.	संजय यादव, स.ले.प.अ. सोनू कुमार, स.ले.प.अ.	शुभम वर्मा, आशुलिपिक बृजपाल सिंह, स.ले.प.अ.
अंताक्षरी	अखिलेश, डी.ई.ओ. प्रतीक, डी.ई.ओ.	दुष्यंत कुमार, स.ले.प.अ. भानू प्रताप सिंह, व.ले.प.	अमित लाठर, व.ले.प. मनु अनेजा, ले.प.

गणतंत्र दिवस 2020 पर 'नकद पुरस्कार' एवं 'प्रशस्ति पत्र' प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारी

क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम	क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम
1	नवनीत कुमार	व.ले.प.अ.	12	रोशन लाल शर्मा	व.ले.प.अ.
2	भूपिन्दर सिंह	व.ले.प.अ.	13	गुरू सरूप बंसल	व.ले.प.अ.
3	योगेन्द्र सिंह	व.ले.प.अ.	14	कुलविन्दर सिंह	स.ले.प.अ.
4	सतीश कुमार	व.ले.प.अ.	15	सुरिन्दर गोयल	स.ले.प.अ.
5	नरेन्द्र कुमार	व.ले.प.अ.	16	प्रशान्त यादव	स.ले.प.अ.
6	रवि कौशिक	व.ले.प.अ.	17	रितु	स.ले.प.अ.
7	रितेश कुमार	व.ले.प.अ.	18	लखन लाल मीणा	स.ले.प.अ.
8	राजेश गुप्ता	व.ले.प.अ.	19	बी.के. सिन्हा	स.ले.प.अ.
9	दीपक अरोड़ा	व.ले.प.अ.	20	विनिल अरोड़ा	स.ले.प.अ.
10	रजनीश जोनेजा	व.ले.प.अ.	21	संतोष कुमार	स.ले.प.अ.
11	वंदना शर्मा	व.ले.प.अ.	22	मोहन लाल	स.ले.प.अ.

क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम	क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम
23	हर्षित बाथम	स.ले.प.अ.	50	राजकुमार	व.ले.प.
24	मीनू रानी	स.ले.प.अ.	51	आफताबवीर सिंह	व.ले.प.
25	संदीप कुमार	स.ले.प.अ.	52	वरिन्दर कंवर	व.ले.प.
26	रमेश कुमार	स.ले.प.अ.	53	राजेश शर्मा	व.ले.प.
27	मुनीष कुमार	स.ले.प.अ.	54	संजीव कुमार	व.ले.प.
28	दीपक सक्सेना	स.ले.प.अ.	55	दीपक गुरंग	व.ले.प.
29	सुनील यादव	स.ले.प.अ.	56	पंकज सिंह	लिपिक
30	तिलक राज	स.ले.प.अ.	57	नीरज कुमार	डी.ई.ओ.
31	वीना रानी	निजी सचिव	58	देशराज	डी.ई.ओ.
32	पवन कुमार	व.ले.प.	59	ललित कुमार	डी.ई.ओ.
33	कर्मा अंगदुई	व.ले.प.	60	विकास लाठर	डी.ई.ओ.
34	निकिता	व.ले.प.	61	गौतम कुमार	डी.ई.ओ.
35	नन्द लाल	व.ले.प.	62	कुलदीप सिंह	डी.ई.ओ.
36	विजय कुमार	व.ले.प.	63	मोहित कुमार	डी.ई.ओ.
37	नितिन गोस्वामी	व.ले.प.	64	देवेन्द्र प्रताप सिंह	डी.ई.ओ.
38	सुरिन्दर कुमार	व.ले.प.	65	मनजीत कुमार	डी.ई.ओ.
39	भानूप्रताप सिंह थोलिया	व.ले.प.	66	विश्राम मीणा	डी.ई.ओ.
40	राजेश कुमार	व.ले.प.	67	राम नारायण	एम.टी.एस.
41	अनिल महाजन	व.ले.प.	68	प्रदीप	एम.टी.एस.
42	गुरतेज सिंह	व.ले.प.	69	मनीष कुमार मीणा	एम.टी.एस.
43	प्रेम ग्रोवर	व.ले.प.	70	जोगिन्दर सिंह	एम.टी.एस.
44	रोहित शर्मा	व.ले.प.	71	पुष्पिन्दर सिंह	एम.टी.एस.
45	नवीन कुमार	व.ले.प.	72	सुनील सोरेन	एम.टी.एस.
46	उत्पल शाह	व.ले.प.	73	विक्रम	एम.टी.एस.
47	आशीष सचान	व.ले.प.	74	मंजीत	एम.टी.एस.
48	विनोद कुमार	व.ले.प.	75	संजीव कुमार	कैंटीन अटैडेंट
49	गोविन्द सिंह	व.ले.प.	76	भूपेन्द्र सिंह	हलवाई-कम कुक

गणतंत्र दिवस 2020 पर 'प्रशस्ति पत्र' प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारी

क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम	क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम
1	रमेश कुमार	व.ले.प.अ.	26	अनुराग भारती	स.ले.प.अ.
2	मनोज कुमार	व.ले.प.अ.	27	कमलेश कुमार	स.ले.प.अ.
3	राजीव कुमार	व.ले.प.अ.	28	प्रवेद कुमार	स.ले.प.अ.
4	रितु शर्मा	व.ले.प.अ.	29	कपिल कुमार	स.ले.प.अ.
5	रेखा रानी	व.ले.प.अ.	30	प्रवीन कुमार जोशी	स.ले.प.अ.
6	अमित सिंह	व.ले.प.अ.	31	राहुल गुप्ता	स.ले.प.अ.
7	सतीश कुमार	व.ले.प.अ.	32	देवेन्द्र सिंह मीणा	स.ले.प.अ.
8	गुलशन राय	व.ले.प.अ.	33	दुष्यंत कुमार	स.ले.प.अ.
9	लक्ष्मीकांत वालिया	व.ले.प.अ.	34	शिव शरण	स.ले.प.अ.
10	हरजिंदर कुमार	व.ले.प.अ.	35	मनीष देव	स.ले.प.अ.
11	कमलेश वर्मा	व.ले.प.अ.	36	रमेश साह	स.ले.प.अ.
12	सतीश कुमार बंसल	व.ले.प.अ.	37	बी.के. गोयल	कन्सल्टेंट
13	कुलदीप कौशिक	व.ले.प.अ.	38	अविनाश पासी	कन्सल्टेंट
14	सुषमा रानी	व.ले.प.अ.	39	जसवीर सिंह राघव	पर्यवेक्षक
15	संजय अग्रवाल	व.ले.प.अ.	40	हरीश कुमार कक्कड़	पर्यवेक्षक
16	अनुपमदीप	स.ले.प.अ.	41	हरजीत सिंह	कल्याण सहायक
17	रमेश कुमार	स.ले.प.अ.	42	हरकीरत कौर मरवाह	व.ले.प.
18	विश्वजीत सिंह	स.ले.प.अ.	43	जोगिन्दर	व.ले.प.
19	राज सिंह	स.ले.प.अ.	44	नीरज कुमार मीणा	व.ले.प.
20	श्रीमन अशोक	स.ले.प.अ.	45	चन्द्र पाल	व.ले.प.
21	बृज पाल सिंह	स.ले.प.अ.	46	डॉ लाखा राम	व.ले.प.
22	बाल गोविंद तिवारी	स.ले.प.अ.	47	अमित लाठर	व.ले.प.
23	प्रदीप	स.ले.प.अ.	48	प्रवीन कुमार अरोड़ा	व.ले.प.
24	तपेश कुमार	स.ले.प.अ.	49	जोगिन्दर	व.ले.प.
25	अनूप सिंह	स.ले.प.अ.	50	जीवना राम	व.ले.प.

गणतंत्र दिवस 2020 पर 'प्रशस्ति पत्र' प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारी

क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम	क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री)	पदनाम
51	तुषार बडेचा	व.ले.प.	64	कृष्ण कुमार	ले.प.
52	आनन्द तिवाड़ी	व.ले.प.	65	कर्मवीर सिंह	ले.प.
53	कार्तिक भारद्वाज	व.ले.प.	66	निखिल गुप्ता	ले.प.
54	हरमिंदर सिंह	व.ले.प.	67	शुभम वर्मा	आशुलिपिक
55	हरविंदर पाल	व.ले.प.	68	राज कुमार	लिपिक
56	संजीव कुमार देओपा	व.ले.प.	69	कल्याणी	लिपिक
57	सौरभ	व.ले.प.	70	नज़मा खान	लिपिक
58	आकिब जावेद	व.ले.प.	71	राम दत्त	लिपिक
59	निखिल पराशर	व.ले.प.	72	शीश पाल	लिपिक
60	अमनदीप बत्रा	व.ले.प.	73	रवि मान	डी.ई.ओ.
61	अनिल कुमार मलिक	व.ले.प.	74	राजित कुमार	डी.ई.ओ.
62	सादिक	व.ले.प.	75	सोनू	डी.ई.ओ.
63	शिव कुमार	व.ले.प.	76	नरेश पाल	एम.टी.एस.

हिंदी साहित्य का सफर

ललित कुमार

मधुर-मधुर शब्दों में
बना अथाह ये सागर
हिंदी का है रस जिसमें
झूमे पीकर मन पागल।।
खुसरो की सुनो पहेली
रस वीर भरा कोई रासो
पद गा लो विद्यापति के
दर्शन कर लो आदि के।।
भक्ति के सर में डूबो
चाहे निर्गुण सगुण बखानो
तुलसी के राम बुला लो
चाहे सूर के कृष्ण पुकारो।।

कबीर के दोहे अद्भुत
इस जग को रहे समझाए
हिंदी में क्या शक्ति है
यह सब को रहे बताए।।
भक्ति हो गई हिंदी की
अब करे क्या श्रृंगार
राधा और कृष्ण की लीला
बिहारी ने किया कमाल।।
जब आधुनिक युग आया
महावीर का डंका बाजा
भारतेन्दु की निज भाषा
सोया भारत भी जागा।।

कवि पंत की नदियां कल-कल
हिंदी में गीत सुनाती
और नीर भरी बदली भी
हिंदी का रस बरसाती।।
कैसे गुणगान करूं मैं
कोई शब्द समझ नहीं आता
भारत की यह शक्ति है
अक्षर में बसे विधाता।।

सेवानिवृत्ति

समय अपनी गति से चलता रहता है। जिन साथियों के साथ हम इकट्ठे कार्य करते हैं, जिनकी कार्यक्षमता और अनुभव से लाभान्वित होते हैं, उनके कार्यालय से जाने का अर्थात् सेवानिवृत्त होने का समय आ ही जाता है। इस कार्यालय में उनके द्वारा की गई सेवा तथा मार्गदर्शन के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं और उनकी दीर्घायु तथा भावी जीवन के लिए सुख-समृद्धि की कामना करते हैं।

क्र.	नाम (सर्व श्री/सुश्री	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1	रमेश चन्द्र	व.ले.प.अ.	31.07.2019
2	अरविंद पाठक	पर्यवेक्षक	01.08.2019 (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति)
3	दलजीत सिंह	ले.प.अ.	31.08.2019
4	अनंत राम शर्मा	व.ले.प.अ.	31.08.2019
5	गुरमुख सिंह	व.ले.प.	31.08.2019
6	लखन सिंह	व.ले.प.अ.	30.09.2019
7	विरेन्द्र सिंह मान	व.ले.प.अ.	30.09.2019
8	बिरेन्द्र कुमार गोयल	व.ले.प.अ.	30.11.2019
9	नारायण लाल शाह	रिकार्ड कीपर	30.11.2019
10	रमेश कुमार	स.ले.प.अ.	31.12.2019
11	ईश्वर दास	वरिष्ठ रिकार्ड कीपर	31.12.2019
12	सतबीर सिंह मलिक	व.ले.प.अ.	29.02.2020
13	अमर चन्द	स.ले.प.अ.	31.03.2020
14	नन्द राम	व.ले.प.	31.03.2020
15	राज कुमार पुनिया	पर्यवेक्षक	30.04.2020
16	जीवना राम	व.ले.प.	30.04.2020
17	रघुबीर सिंह	व.ले.प.	30.04.2020
18	जसबीर सिंह राघव	पर्यवेक्षक	31.05.2020

श्रद्धांजलि

जब अचानक किसी साथी को हमसे किसी अदृश्य शक्ति द्वारा छीन लिया जाता है तो हमें विधि का विधान मानकर उसकी जुदाई की पीड़ा सहनी पड़ती है। अपने बिछुड़े हुए साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उस असीम शक्ति से हम उनकी आत्मा की शांति तथा विपदा की घड़ी में उनके प्रियजनों को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

क्र.	नाम (सर्व श्री)	पदनाम	निधन की तिथि
1	चन्द्र पाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	02.03.2020
2	समुन्द्र सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	07.05.2020

'यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है'।

हिंदी कार्यशाला, श्रुत लेख, सेवानिवृत्ति

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा,
प्लॉट नं. 4-5, सैक्टर 33 बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़
www.aghry.nic.in